ज्ञानामृत

मई, 1985
वर्ष 20 ❋ अंक 11

मूल्य 1.35

परमात्मा ही शान्ति के सागर हैं। केवल परमात्मा से ही योग युक्त होकर शान्ति की प्राप्ति हो सकती है। सर्वशक्तिवान परमात्मा से बुद्धि का योग लगाकर मन को नियंत्रण करने की शक्ति प्राप्त होती है और विकारों से छुटकारा होता है। परमात्मा शिव जो कि सर्व आत्माओं के परमपिता हैं अब सहज ज्ञान और सहज राजयोग की शिक्षा दे रहे हैं जिससे कि आत्मा पवित्र बनती है और शान्ति की प्राप्ति करती है।

आबू स्थित ओमशान्ति भवन, यात्रियों के लिये आकर्षण का केन्द्र बन गया है। प्रतिदिन हज़ारों यात्री इसे देखकर लाभ उठाते हैं। चित्र में पालनपुर से पधारे गणेशपुरा प्राथमिक शाला के बच्चे ओमशान्ति भवन देखने के पश्चात् खड़े हैं।

इन्दौर में न्यू पलासिया स्थित 'ओमशान्ति भवन' में सहज राजयोग साधना शिविर के मासिक कार्यक्रम 'योगांजलि' का उद्‌घाटन दीप प्रज्जवलित कर, करते हुए मध्यप्रदेश के मुख्य-मन्त्री भ्राता मोतीलाल वोराजी, साथ में हैं ग्याना के उच्चायुक्त भ्राता स्टीव नारायण ब्र० कु० ओमप्रकाश, ब्र० कु० निर्मला आदि।

गामदेवी-बम्बई सेवा केन्द्र पर स्वामी, चिन्मयानन्द जी के पधारने के उपलक्ष में आयोजित कार्यक्रम के अन्त में स्वामी जी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र० कु० निर्मला जी।

कैथल सेवा केन्द्र के नए भवन का उद्‌घाटन करती हुई ब्र० कु० दादी चन्द्रमणि जी, ब्र० कु० पुष्पा तथा अन्य साथ में हैं।

कलकत्ता में आध्यात्मिक संग्रहालय में आयोजित युवा वर्ष से सम्बन्धित कार्यक्रम में भ्राता भोलानाथ सेन (संसद सदस्य) अपने विचार देते हुए। साथ में ब्र० कु० दादी निर्मलशान्ता

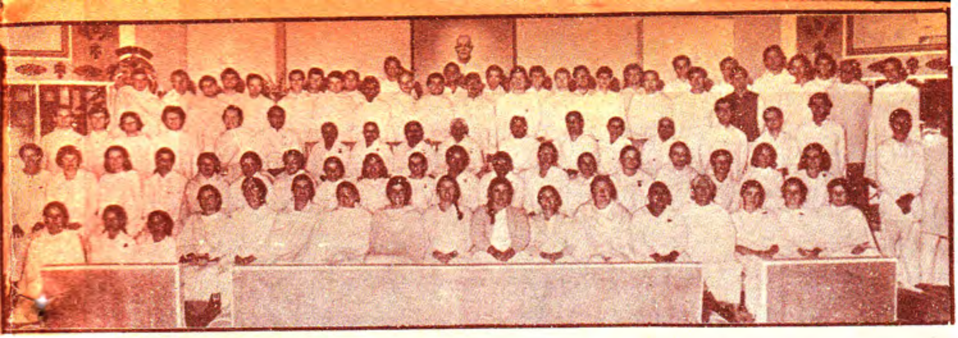

ब्र० कु० ईश्वीरय विश्व विद्यालय, आबू पर्वत पर, विश्व के कौने-कौने से आध्यात्मिक उन्नति हेतु आध्यात्मिक उच्च प्रशिक्षण हेतु ब्र० कु० भाई बाहनें आते रहते हैं। चित्र में आस्ट्रेलियन ग्रुप।

लक्ष्मणगढ़ में आयोजित प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए प्रधानाचार्य वर्मा जी, पूनम बहन उन्हें चित्रों की व्याख्या दे रही हैं। →

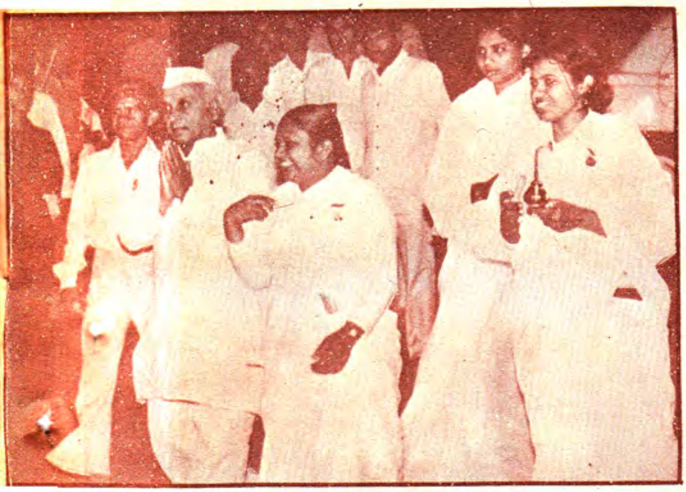

भोपाल में म० प्र० के उच्च शिक्षामन्त्री भ्राता जायसवाल जी को 9 देवियों की चैतन्य झांकी का अवलोकन कराते हुए ब्र० कु० प्रतिभा बहिन। साथ में ब्र० कु० मीनाक्षी तथा रेशम बहिन खड़ी हैं।

कराड एस० टी० बस० स्टैन्ड पर हुई प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए कराड एस० टी० डिपो के मैनेजर भ्राता पगारे जी। →

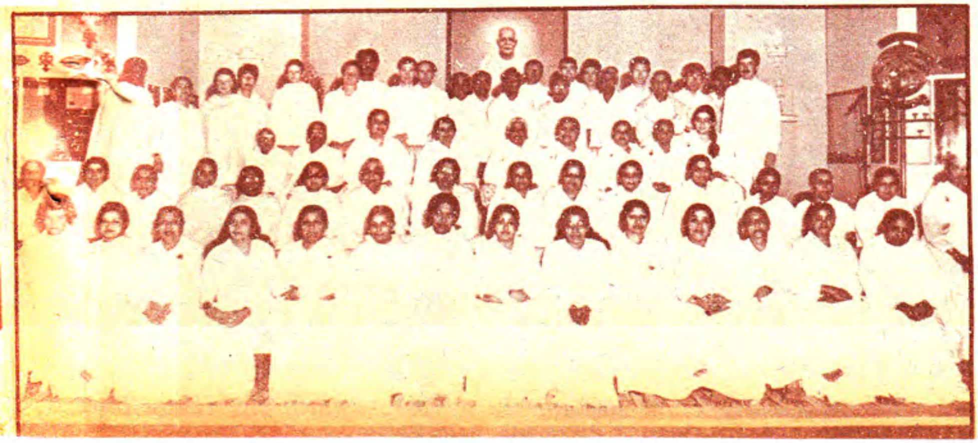

आबू पर्वत, ओम शान्ति भवन ब्र० कु० ई० वि० विद्यालय की मुख्य प्रशासिका, अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका तथा अन्य राजयोग शिक्षकगण के साथ यू० के० ग्रुप

Regd No. 10563/65-D(E)-70

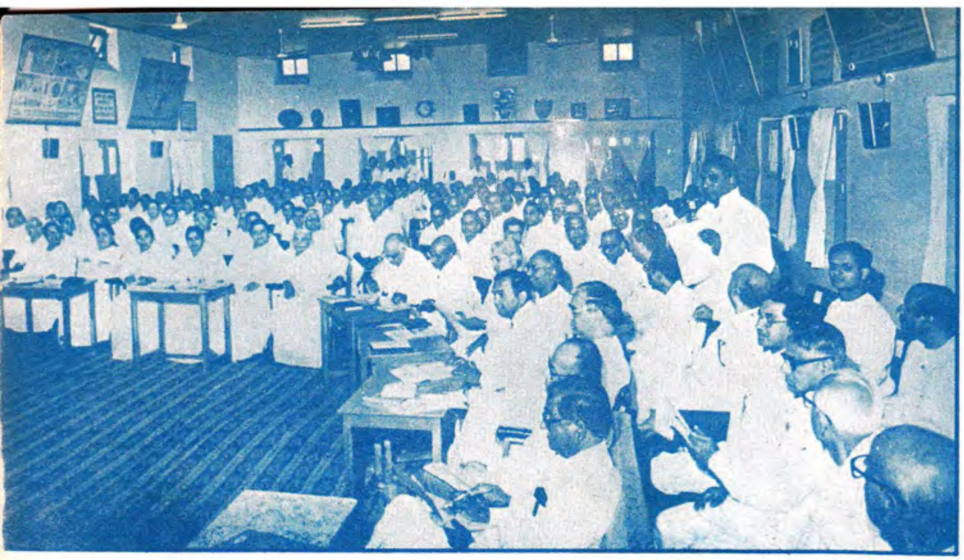

गोलडन जुबली मनाने की तैयारियाँ आरम्भ। आबू स्थित पाण्डव भवन, मैडीटेशन हाल में विचार विमर्श करते हुए विश्व के भिन्न-भिन्न स्थानों से पधारे मुख्य ब्र० कु० भाई-बहिनें।

लातूर—राजयोग सेवा केन्द्र पर महाराष्ट्र राज्य के शिक्षामन्त्री भ्राता विलासराव जी देशमुख पधारे। उस समय उन्हें ब्र० कु० नीरा दस सूत्री आबू-कार्यक्रम के बारे में समझा रही हैं। उनके (दाएँ) भ्राता प्रदीप राठी प्रसिद्ध उद्योगपति बैठे हैं।

मध्यप्रदेश के मुख्यमन्त्री भ्राता मोतीलाल वोरा जी के भोपाल स्थित 'राजयोग भवन' में पधारने पर उन्हें ब्र० कु० अवधेश बहिन राजयोग भवन का अवलोकन कराते हुए।

मोदीनगर में डाक्टरों के स्नेह मिलन में मध्य में ग्याना के उच्चायुक्त भ्राता स्टीव नारायण के साथ डॉ० ओमपाल सिंह जी।

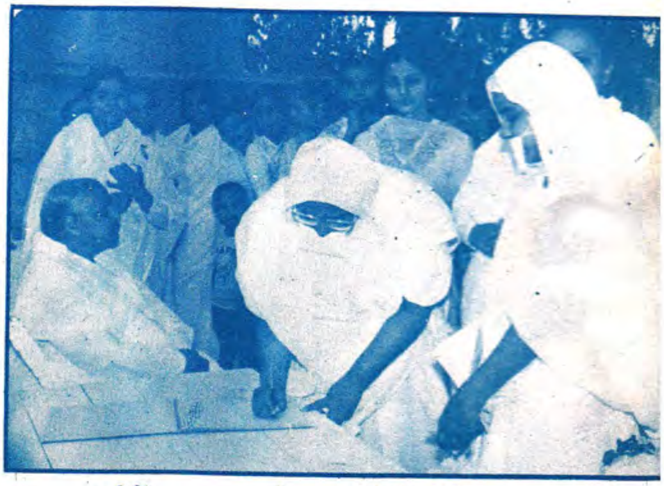

बम्बई में सहज राजयोग प्रदर्शनी देखने के पश्चात् अपने विचार लिख रही हैं जैन धर्म की प्रखर व्याख्यता महासती धर्मशीला जी, साथ में हैं पुण्यशीला जी, ब्र० कु० विजय तथा अन्य।

अमृत-सूची

क्रम सं०	विषय	पृष्ठ
१.	आधार रूप और उद्धार रूप बनने के लिए उदारचित बनो	१
२.	प्रभु-कृपा (सम्पादकीय)	२
३.	ईश्वर-परम शिक्षक के रूप में	५
४.	पेगाम शिव का सबको सुनाना है दोस्तो (कविता)	६
५.	काश्यप धमकेतु का पुनः उदय: पुनः वही महाभारत का समय !	१०
६.	युवक तू पूरी करेगा आस ! (कविता)	१२
७.	शुद्ध कमाई और अशुद्ध कमाई के परिणाम में अन्तर (कहानी)	१३
८.	आधार हो विश्व के (कविता)	१६
९.	माया का झूठा बंधन	१७
१०.	स्कूल, कालेज की छात्राओं के लिए इन्दौर में एक अलौकिक होस्टल	१८
११.	सहज योगी बनने की सहज विधि	१९
१२.	मितव्ययता : जीवन जीने की कला	२१
१३.	जीवन देकर भी सन्तोष न हुआ	२२
१४.	सूक्ष्म सेवाएं तथा राजयोग अनुभूति	२४
१५.	शराब की जगह ज्ञान-अमृत पी रहा हूँ	२७
१६.	अब्बा का मिलन	२८
१७.	आओ खेल खेलें	२९
१८.	आपको कितना मालूम है ?	२९
१९.	आध्यात्मिक सेवा-समाचार	३०

आबू के शिखर से

आधार रूप और उद्धार रूप बनने के लिये उदारचित बनो

"आधार रूप और उद्धार रूप में सफलता पाने के लिये उदारदिल व उदारचित की विशेषता चाहिये। उदार चित में तीन निशानियाँ विशेष होंगी :

ऐसी आत्मा ईर्ष्या, घृणा और क्रिटिसाइज (आलोचना) करना—इन तीनों बातों से सदा मुक्त होगी। इसको कहा जाता उदारचित। ईर्ष्या स्वयं को भी परेशान करती, दूसरे को भी परेशान करती है। जैसे क्रोध को अग्नि कहते हैं ऐसे ईर्ष्या भी अग्नि जैसा ही काम करती है। क्रोध महा अग्नि है, ईर्ष्या छोटी अग्नि है। घृणा कभी भी शुभ चिन्तक, शुभ चिन्तन स्थिति का अनुभव नहीं करायेगी। घृणा अर्थात् खुद भी गिरना और दूसरे को भी गिराना। ऐसे क्रिटिसाइज करना चाहे हँसी में करो चाहे सीरियस होकर करो लेकिन यह ऐसा दुख देना है जैसे कोई चल रहा हो, उसको धक्का देकर गिराना, ठोकर देना। जैसे कोई को गिरा देते तो छोटी चोट वा बड़ी चोट लगने से वह हिम्मतहीन हो जाता है। उसी चोट को ही सोचते रहते हैं। जब तक वह चोट होगी तब तक चोट देने वाले को किसी भी रूप से याद जरूर करता रहेगा तो यह साधारण बात नहीं है। जिसके लिए कह देना बहुत सहज है। लेकिन हँसी की चोट भी दुख रूप बन जाती है। यह दुख देने की लिस्ट में आता है।"

अव्यक्त बाप दादा

सम्पादकीय

प्रभु-कृपा

एक परमपिता परमात्मा ही को 'ज्ञान का सागर' और 'सत्य स्वरूप' कहा गया है। सभी ईश्वर-वादी लोग परमात्मा के इन दो गुणों को मानते ही हैं।

इन दो गुणों को जोड़ने से यह निष्कर्ष निकलता है कि अपना सत्य ज्ञान परमात्मा स्वयं ही दे सकते हैं। जबकि अन्य आत्माएँ न तो ज्ञान से परिपूर्ण हैं और न ही सदा-सर्वदा सत्य निष्ठ और अमिश्रित सत्य के ज्ञाता हैं तब भला वे दूसरों को सम्पूर्ण सत्य का बोध कराने का कैसे दम भर सकते हैं। जन्म-मरण और सुख-दु:ख के चक्र में आने और कर्म-बन्धन तथा विकर्मों की जंजीरों में जकड़े जाने से यह स्वत: प्रमाणित है कि संसार में जितने भी मनुष्य हैं, चाहे वे किसी भी उपाधि से विभूषित हों, वे सम्पूर्ण, शाश्वत एवं अमिश्रित सत्य के यथार्थ ज्ञाता नहीं हैं।

परमात्मा के बारे में न तो मनुष्यों को उसका दिव्य रूप ही ज्ञात है न ही उसके गुण, कर्म, स्वभाव और प्रभाव ही। केवल वे अपनी अटकलें विभिन्न दर्शनों के रूप में अभिव्यक्त करते हैं अथवा व्याकरण और शब्द कोष के आधार पर शब्दों की व्याख्या देने का यत्न करते हैं। अनुभव-जन्य ज्ञान और यथार्थ बोध तो मनुष्य को तभी होता है जब सत्य स्वरूप परमात्मा स्वयं ज्ञान देते हैं और उस ज्ञान का सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि उस ज्ञान द्वारा अन्धकार का नाश होने लगता है और संसार में चारित्रिक प्रकाश फैलता जाता है जिससे श्रेष्ठतम युग, जिसे सतयुग भी कहते हैं, की स्थापना होने लगती है।

इसी विचार-शृंखला में परमात्मा के गुणों पर यदि ध्यान दिया जाए तो स्पष्ट हो जाएगा कि उनका भी यथार्थ बोध मनुष्यात्माओं को तभी होता है जब परमात्मा स्वयं आकर अपने गणों का परिचय और अनुभव कराते हैं।

उदाहरण के तौर पर सभी ईश्वरवादी लोग कहते हैं कि परमात्मा दयालु अथवा कृपाल है। बात-बात में वे परमात्मा की कृपा का वर्णन करते हैं। अगर रास्ते में चलते हुए उनसे कोई पूछता है—"क्या हालचाल है ?" तो वह उत्तर में कहता है—"प्रभु की कृपा है।" इसका भाव यह हुआ कि अगर हालचाल ठीक न हो तो प्रभु की कृपा का अभाव है। गोया प्रभु भी मूडी (Moody) और मिज़ाजी आदमी की तरह है कि जिसके मन में मौज आ जाए तो कृपा कर ली और न आए तो न की ! इसी प्रकार जब कभी हम किसी को कहते हैं कि आकर ज्ञान-श्रवण और योगाभ्यास किया करो तो वह झट से कहता है कि "अगर ईश्वर की कृपा हुई तो अवश्य आयेंगे।" इसका भी तो यही अर्थ निकलता है कि ईश्वर ही की कृपा की कमी है वर्ना मियांजी खुद तो तैयार हैं ! भक्ति मार्ग में प्रतिदिन आरती करते हुए हम मनुष्य को यही तो कहते हुए सुनते हैं—"मैं मूरख, खल, कामी कृपा करो भरता।" रोज़ मनुष्य प्रार्थना कर लेता है, फिर भी उस पर कृपा तो होती नहीं वर्ना आरती करने वाला स्वयं तो अपनी मूर्खता व कामीपन को छोड़ने को तैयार ही है। इस प्रकार यद्यपि मनुष्य को 'कृपा' शब्द का शब्द कोष में दिया हुआ अर्थ तो ज्ञात है तथापि परमात्मा की कृपा का क्या स्वरूप है और परमात्मा किस पर और कब कृपा करता है, इसका बोध न होने के कारण उनकी समस्त आयु कृपा की याचना करने में ही व्यतीत हो जाती है।

बल्कि कई बार ता ऐसा होता है कि परमात्मा की जब कृपा हो रही हो तो भी मनुष्य कृपा का

रूप न समझने के कारण उसे अभिशाप समझ लेता है और उस कृपा का स्वागत करने के बजाय उससे पीछा छुड़ाने की कोशिश करता है। उदाहरण के तौर पर परमात्मा मनुष्य पर कृपा करके उसे सद्ज्ञान और सद्विचार देकर सद्बुद्धि का वरदान देता है जिससे कि वह पवित्र बने। परन्तु मनुष्य समझता है कि यह तो कोई उसे भोग्य पदार्थों से छुड़ा रहा है और कि वह वंचित होता जा रहा है। अतः वह पवित्रता और सद्बुद्धि को कृपा और वरदान की बजाय वञ्चना और अभिशाप मानने लगता है।

अन्य कुछ लोग ऐसे हैं जो यह कहते हैं, यदि परमात्मा दयालु और कृपालु है तो वो हमारे पापों के लिए हमें क्षमा क्यों नहीं करता ? वे समझते हैं कि परमात्मा की दयालुता व कृपाशीलता मनुष्य के पापों को क्षमा करने ही का दूसरा नाम है। अतः वे पाप भी करते रहते हैं और यह भी कहते रहते हैं कि हे दयानिधे, हे कृपा-सिन्धु, मुझ नीच पर, मुझ अकिंचन पर दया करो। ऐसा कहते हुए भी वे यह नहीं समझते कि अगर परमात्मा दया व कृपा करेगा भी तो हम कैसे समझ पायेंगे कि यह उसकी दया हो रही है।

ऐसे भी श्रद्धालु व भक्त लोग संसार में हैं जो यह मानते हैं कि "परमात्मा की कृपा के बिना पत्ता भी नहीं हिल सकता। ये सब जो चराचर जगत है, दयानिधान परमात्मा की करुण कृपा से चल रहा है।" गोया वे प्रकृति के तत्वों व प्राकृतिक ऊर्जा (Natural Energy) के कार्यकलापों तथा मनुष्य के अपने कर्मों को भी परमात्मा की कृपा से मिला देते हैं।

इस प्रकार संसार के लोग परमात्मा के इस एक गुण को लेकर भी उलझन अथवा गलतफहमी में पड़े हुए हैं और उसकी कृपा से वंचित हैं। ऐसे ही हम परमात्मा के हरेक गुण को लेकर हम यह स्पष्ट कर सकते हैं कि जिस परमात्मा के गुणों का भक्त-जन वर्णन करते हैं, उन गुणों का ज्ञान भी संसार से लुप्त है। परमात्मा के दिव्य नाम, दिव्य-रूप, दिव्य कर्त्तव्यों की तो बात ही छोड़ दीजिए।

परमात्मा की वास्तविक कृपा क्या है ?

यदि मनुष्य की इच्छाओं का विश्लेषण किया जाए तो हम इस निष्कर्ष पर पहुँचेंगे कि मनुष्य जब परमात्मा से कृपा की याचना करता है तो वह वास्तव में चाहता यह है कि उसकी सब इच्छाएँ पूर्ण हों परन्तु स्पष्ट है कि परमात्मा उनकी अशुभ, अनर्थकारी, अकल्याणकारी एवं दुःखदायक इच्छाओं को तो पूर्ण करेगा नहीं क्योंकि वह कृपा-सिन्धु होने के साथ-साथ कल्याणकारी भी है और उसके साथ-साथ पतित-पावन भी। वह किसी की भी ऐसी इच्छा पूर्ण नहीं करता जिस इच्छा से वह दूसरे को दुःख देना चाहता हो क्योंकि वह तो सबके लिए कृपा का सागर है। वह एक पर कृपा करके उसके निमित्त दूसरे पर अकृपा नहीं करता वल्कि एक पर भी ऐसी कृपा करता है कि जिसके द्वारा दूसरों की भी भलाई ही हो। मनुष्य तो एक को वंचित करके दूसरे की झोली भरने का काम भी कर भी देता है परन्तु परमात्मा न्यायकारी है' वह सर्व का पिता है, सर्व का दाता है। एक को खाली करके दूसरों को नहीं भरता। वह पक्षपात नहीं करता। वह मनुष्य को अपने दान ही पर निर्भर नहीं करता बल्कि उस पर ऐसी विधि कृपा करता है कि जिससे वह पुरुषार्थ-हीन भी न बने, कोरा भाग्यवादी भी न हो बल्कि हिम्मतवान बनकर उसकी मदद के साथ-साथ अपने पुरुषार्थ से अपनी प्रारब्ध ऊंची बने जिससे संसार का नियम और न्याय भी बना रहे। कर्म-विधान भी खंडित न हो और मनुष्य "जैसी करनी वैसी भरनी" के आधार पर अपने कर्मों को श्रेष्ठ बनाये। परमात्मा ऐसी कृपा नहीं करता कि मुट्ठी भर कर जेब में डाल दे क्योंकि दूसरे से प्राप्त वस्तु से मनुष्य को इतनी खुशी नहीं होती जितनी कि अपने पुरुषार्थ से पाई गई वस्तु से होती है। अतः परमात्मा की कृपा तो यह है कि वह पुरुषार्थ तो मनुष्य से ही कराता है परन्तु रास्ता वह

बताता है, मार्ग वह दर्शाता है, विघ्नों और कठिनाइयों को पार करने की मदद शरणागत वत्सों को वह देता है ।

उपरोक्त अनुच्छेद पर विचार करने से हम इसी निष्कर्ष पर पहुँचेंगे कि मनुष्य चाहता है कि उसकी सभी इच्छाएँ पूर्ण हों और उसकी इच्छाएँ यह हैं कि वह तन से स्वस्थ हो, मन से शान्त, प्रसन्न और सन्तुष्ट हो, बुद्धि से विचारशील हो, कर्मों में कुशल और प्रतिभाशाली हो और परस्पर सम्बन्धों में सुख, स्नेह और सहयोग सम्पन्न हो, धन-धान्य में निश्चिन्त और सदा-सर्वदा मंगल-कुशल स्थिति में बना रहे। परन्तु ये सब प्राप्तियाँ, उपलब्धियाँ, मनोरथ अथवा सिद्धियां कर्म के अधीन हैं। कर्म श्रेष्ठ होने से ये सब प्रकार का श्रेष्ठ भाग्य अथवा श्रेष्ठ प्रारब्ध उपलब्ध होती है। परन्तु कर्म तो स्वयं भो संस्कार, विचार, विवेक, निर्णय, सूझ और बौद्धिक प्रतिभा के आधीन हैं और इनमें सद्-असद् बुद्धि, शुद्ध-अशुद्ध संस्कार, पवित्र-अपवित्र विचार, ठीक और गलत निर्णय का भेद है जिससे ही मनुष्य के कर्म अच्छे या बुरे होते हैं और उनसे ही उसे उत्तम, मध्यम या कनिष्ठ प्राप्ति होती है । अतः इससे स्पष्ट है कि संस्कारों की शुद्धि, विचारों की पवित्रता, बुद्धि की सात्विकता, निर्णय की विवेकशीलता ही सर्वोत्तम वरदान है। उस वरदान को परमात्मा से प्राप्त करना ही प्रभु-कृपा प्राप्त करना है जिससे अन्य सब उपलब्धियाँ उसके साथ शृंखला की न्यायीं जुड़ी हुई प्राप्त हो ही जाती हैं।

परन्तु यह पवित्रता-अपवित्रता, ईश्वरोय ज्ञान, योगाभ्यास और दिव्य गुणों की धारणा पर निर्भर है। इनसे ही संस्कार शुद्ध, विचार पवित्र, बुद्धि सात्विक, निर्णय विवेक-युक्त और कर्म श्रेष्ठ व सबल होते हैं। अतः मनुष्य को चाहिए कि यदि वह प्रभु-कृपा चाहता है तो वह ईश्वरीय ज्ञान का श्रवण करे, परमात्मा द्वारा सिखाए सहज हुए योग का अभ्यास करे, उस द्वारा प्रशस्त मार्ग पर चलकर दिव्य गुणों की धारणा करे और ईश्वरीय सेवा द्वारा अपने अभिमान का मर्दन करे अर्थात् निरहंकारी व नम्र बने और इससे प्रभु-कृपा से अपनी झोली भर ले। जबकि वह स्वयं ही कहता है कि परमात्मा कृपा का सागर है, दया का सिन्धु है तो उसे मालूम होना चाहिए कि परमात्मा ज्ञान भी सागर जितना ही मनुष्यों को देता है और वह दिव्य गुणों की भी खान ही मनुष्य के हवाले करता है; वह सर्वशक्तिमान् प्रभु योग की भी अपार शक्ति देने की कृपा करता है। अतः अब मनुष्य को परमात्मा की इस अपार कृपा लेने में थकना नहीं चाहिए। वह नित्य-प्रति ज्ञान सुने, खूब योग का धन कमाए, दिव्य गुणों के आभूषणों से आत्मा को विभूषित करे और आत्मिक सुख के खजानों से स्वयं को निहाल व मालामाल करे। उसे जब ईश्वरीय ज्ञान और योग आदि सीखने को निमन्त्रण मिले तब यह न कहे कि 'प्रभु कृपा होगी तो आ जाऊंगा" बल्कि यह समझे कि प्रभु मुझ पर कृपा करने के लिए ही मुझे आमन्त्रित कर रहे हैं और यदि मैं नहीं जाऊँगा तो वंचित रह जाऊँगा।

—जगदीश

सूचना

१. ज्ञानामृत का २१ वां वर्ष जुलाई से आरम्भ हो रहा है, आग्रह है कि अपने सेवाकेन्द्र के ज्ञानामृत तथा वर्ल्ड रिन्युवल के सदस्यों की संख्या २० जून तक भेज देवें।

२. ज्ञानामृत तथा वर्ल्डरिन्युवल का ८५-८६ वर्ष में वार्षिक शुल्क रु० १८ है। कृपया आपके ध्यान पर रहे।

३. अभी तक भी कुछ सेवा केन्द्रों से ८४-८५ वर्ष का शुल्क व पूरा पैसा नहीं आया है कृपया शीघ्र भेजें।

—व्यवस्थापक

ईश्वर--परम शिक्षक के रूप में

ब्र० कु० सूरजकुमार, आबू

"भगवान स्वयं बैठकर कहीं पढ़ाता होगा"—यह बात सुनकर विद्वान तो अवश्य ही चौकन्ने होंगे, परन्तु "भगवान ने कभी ज्ञान दिया था"—यह बात वे सहज ही स्वीकार कर लेंगे। ज़रा अन्तर्मुखी होकर सोचो—जहाँ भगवान के द्वारा ज्ञान की बरसात होती हो, उन मनुष्यों की जीवन रूपी खेती में कितनी बहार होगी, उनकी सत्य की खोज समाप्त हो गई होगी, उनका मन ज्ञान-रत्नों से भरपूर हुआ अतीन्द्रिय सुखों में नृत्य करता होगा, उनका तीसरा दिव्य नेत्र खुल चुका होगा। ईश्वर को ईश्वर द्वारा जानकर और सृष्टि चक्र को परमपिता द्वारा जानकर वे आत्माएँ भी ज्ञान का मानो साकार ही बन गई होंगी।

भ्रम भी नहीं है और कल्पना भी नहीं···श्रद्धा भी नहीं और मात्र तर्क पर ही आधारित भी नहीं···वरन् प्रत्यक्ष अनुभव युक्त सत्य है कि ईश्वर स्वयं परम शिक्षक बन कर आया है। जिन्होंने उनके मुख से सत्य ज्ञान-वादन सुना है, जिन्होंने उनके सत्य कर्म देखे हैं, जिन्होंने उनकी पावन दृष्टि से अशरीरी स्थिति का दिव्य अनुभव किया है, वे अच्छी तरह से जानते हैं कि ब्रह्माकुमार, कुमारियों को ज्ञान देने वाला कोई देहधारी मनुष्य नहीं है, बल्कि स्वयं ज्योति स्वरूप ईश्वर है।

सम्पूर्ण विश्व के विभिन्न वर्गों के लाखों लोगों ने ज्ञान सागर की ज्ञान की तरंगें सम्मुख बैठकर देखी हैं। उनमें वैज्ञानिक भी हैं और शिक्षा शास्त्री भी, उनमें वेदवादी भी हैं और पंडित भी, उनमें अनेक वकील भी हैं व इन्जीनियर भी, उनमें लेखक भी हैं व अनेक पत्रकार भी, उनमें राजनीतिज्ञ भी हैं और व्यापारी भी, उनमें नास्तिक भी हैं व आस्तिक भी, हिन्दू-मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई और हिन्दु धर्म के विभिन्न मतों के अनुयायी भी। और उन्होंने अपने अनुभव से, वहाँ के पवित्र वातावरण से व परम शान्ति के वाइब्रेशन्स से यह दृढ़ निश्चय किया है कि स्वयं ईश्वर ही साधारण तन में बैठकर ज्ञान दे रहे हैं। उस ज्ञान को सुनकर उन्हें अपना पूर्ववत् ज्ञान फीका लगने लगा और उन्होंने इस सत्य को जानकर अपना सर्वस्व ईश्वरीय कार्य में लगाने का संकल्प किया। जिन्होंने भी उनकी प्रेम से भरपूर मधुर वाणी सुनी उन्हें अवश्य अहसास हुआ कि ये कोई और नहीं, उनका अपना ही परम पिता है···उनकी प्रभु मिलन की इच्छा शान्त हो गई और उन्हें पूर्ण सन्तोष हुआ कि उन्होंने सम्पूर्ण सत्य को जान लिया है।

संसार की स्टेज पर ईश्वर की अनुपम दिव्य लीला चल रही है, परन्तु कोटि-कोटि लोग उससे अनभिज्ञ हैं। प्रस्तुत चर्चा में कुछ तथ्यों द्वारा हम इस विषय को स्पष्ट करेंगे ताकि इच्छुक लोग इस पर गम्भीरता से विचार कर सकें।

परमात्मा कब पढ़ाते हैं—

परमात्मा को धरा पर आकर पढ़ाने की आवश्यकता है या वह प्रेरणा से ही सत्य का रहस्योद्घाटन कर सकता है। यद्यपि वह सब कुछ कर सकता है, परन्तु हमें तो यह देखना है कि उसने पूर्व कल्प में क्या-क्या किया था। लोग कहते हैं कि वह सर्वशक्तिवान है तो उसे आने की क्या जरूरत ? प्रश्न सत्य प्रतीत होता है—परन्तु हम पूछते हैं कि वह सर्वशक्तिवान है तो वह पूर्व काल में आया क्यों था ? परन्तु यह उन लोगों का प्रश्न है जो भगवान को उनके सत्य स्वरूप में नहीं जानते।

बात केवल ज्ञान देने की ही नहीं, परन्तु उन्हें तो उन अनेक आत्माओं से मिलना भी है जो उन्हें कई जन्मों से बुलाते आ रहे हैं। आत्माओं का मिलन परमात्मा से अवश्य होता है। क्योंकि यदि

यह मिलन न होता तो किसी को भी परमात्मा से मिलने की इच्छा न होती। वह मिलन अवश्य ही कल्पनातीत परमानन्दों को देने वाला रहा होगा, तब ही तो उस मिलन के लिए मनुष्य अपना सर्वस्व त्यागने को तैयार है।

अतः उसे इस धरा पर आना ही है, वह पूर्व कल्प में भी आया था। तभी उसे ज्ञान-दाता या दिव्य बुद्धि विधाता कहा है। उसने दिव्य कर्म किये हैं तभी तो उनका गायन है। यदि वह मात्र प्रेरणा से ही सब कुछ करता तो उसके दिव्य कर्मों का गायन क्यों होता। और भला उसकी पवित्र प्रेरणाओं को कौन ग्रहण करता क्योंकि अब इस धरा पर कोई भी सम्पूर्ण पावन तो है नहीं। तो···

- परमात्मा कलियुग के अन्त में उस समय ज्ञान देने आते हैं जब चारों ओर अज्ञान का अन्धकार छा जाता है। जब लोग अज्ञान को ही ज्ञान समझने लगते हैं।
- जब शास्त्रों में ज्ञान खोज-खोज कर मनुष्य सत्य तक नहीं पहुँच पाते।
- जब शास्त्रवादी भी शास्त्र-धर्म को छोड़ देते हैं।
- जब सम्पूर्ण सृष्टि पर काम का साम्राज्य छा जाता है और काम ही जीवन है—इस मन्त्र से मनुष्य की बुद्धि सम्पूर्ण कलुषित हो जाती है।
- जब प्रत्येक मनुष्य का अंग-अंग विकृत हो जाता है।
- जब सत्य की हार व असत्य की जीत होने लगती है।
- जब विद्वान और गुरु सभी कौरव पक्ष में चले जाते हैं अर्थात् अधर्म के सहयोगी बन जाते हैं।
- जब सत्य धर्म लोप हो जाता है अर्थात् धर्म निर्बल हो जाता है।
- जब विश्व विनाश के कगार पर जा खड़ा होता है।
- जब मानव से मानवता पूर्णतया नष्ट होने पर पहुँच जाती है।

जब पूर्व काल में भी ईश्वर ने ज्ञान दिया, तब भी वेद शास्त्र उपस्थित थे, धर्म गुरु भी वहीं थे। अब भी वही समय है।

परमात्मा कैसे पढ़ाते हैं ?

अशरीरी परमात्मा ने ज्ञान प्रजापिता ब्रह्मा के मनुष्य तन द्वारा दिया। और उस ज्ञान को धारण करके प्रजापिता ब्रह्मा सम्पूर्ण फरिश्ते स्वरूप को प्राप्त हुए। परमात्मा ने ज्ञान किसी एक मनुष्य को नहीं दिया जो उसने फिर अन्यों को दिया हो, नहीं। परमात्मा सैकड़ों को एक ही साथ बैठकर शिक्षक के रूप में पढ़ाते हैं और सभी सम्मुख बैठे हुए उनकी उपस्थिति का स्पष्ट अनुभव करते हैं।

ईश्वरीय ज्ञान की कुछ अनुपम बातें

हम में से अनेकों ने वेदों के मन्त्रों का श्रवण भी किया है, पुराणों की गाथाएँ भी सुनी हैं, दर्शनों व उपनिषदों का अध्ययन भी किया है और गीता के श्लोकों का गायन भी किया है। परन्तु उनके द्वारा प्राप्त रस व ईश्वरीय ज्ञान द्वारा प्राप्त रस में अपार भेद है। शास्त्रों की बातें सुनकर अतीन्द्रिय सुख नहीं मिलता, मन सन्तुष्ट नहीं होता, ईश्वरीय प्यार नहीं मिलता, कोई वरदान भी नहीं मिलता जबकि परम शिक्षक द्वारा ज्ञान सुनकर इन सभी महान प्राप्तियों से आत्माएँ ओतप्रोत हो जाती हैं।

परमात्मा शास्त्रों का ज्ञान नहीं देते

लोग प्रश्न करते हैं कि आपका ये ज्ञान कहाँ से आया ? ये बातें शास्त्रों में तो लिखी नहीं, किसी महान् विद्वान ने तो ऐसा कहा नहीं, और इसलिए वे इसे कल्पना समझ कर इस पर चिन्तन ही नहीं करते।

परन्तु प्यारे बन्धुओ ! यदि भगवान भी आकर शास्त्र ही सुनावे, तो उसके आने का प्रयोजन ही क्या ? यदि वह भी आकर वही ज्ञान देवे तो उसे ज्ञान का सागर कौन कहेगा ! ! फिर वेदों पर ही आधारित तो भारत में भी अनेक सम्प्रदाय हैं, वह किसका ज्ञान दे···

जिन्होंने उस ज्ञान के सागर को ज्ञान देते हुए देखा है और उसका गहनता से चिन्तन व अनुभव किया है, वे जानते हैं कि उन्होंने शास्त्र पढ़कर

ज्ञान नहीं दिया। बल्कि गीता में कही हुई बात पुनः याद दिलाई कि, "इन वेद, शास्त्र, यज्ञ, तप, दान-पुण्य से कोई भी मुझे नहीं मिल सकता।" और यह सिद्ध करके दिखाया कि शास्त्रों में सम्पूर्ण ज्ञान नहीं है। यदि शास्त्रों में सम्पूर्ण ज्ञान होता तो संसार का पतन न होता। ईश्वरीय सत्य-ज्ञान ने सिद्धान्त व व्यवहार को एक कर दिया। उनके ज्ञान की प्रत्येक बात हमें दिव्य अनुभव कराती है।

परमात्मा ने घर गृहस्थ में सम्पूर्ण पवित्रता का लक्ष्य दिया—

सर्व के परमपिता होने के कारण परमात्मा का ज्ञान सर्व के लिए है। ऐसा नहीं कि अछूत वेद नहीं पढ़ सकते या नारी को ओ३म् कहने का भी अधिकार नहीं या पवित्र बनने के लिए संन्यास लो। परमात्मा के ज्ञान देने का लक्ष्य नर-नारी को पावन बनाना है। इसलिए वे संन्यास की आज्ञा नहीं करते बल्कि घर-गृहस्थ को पावन आश्रम बनाते हैं।

देखिये कितना आश्चर्य, संन्यासी नारी से दूर रहते हैं परन्तु देवियों की पूजा करते हैं। उनसे वरदान माँगते हैं। देवी-देवताओं के आगे श्री शब्द प्रयोग करते हैं और अपने नाम से पूर्व श्री श्री, मानों वे देवताओं से भी श्रेष्ठ हों। श्री श्री तो केवल परमात्मा के लिए प्रयोग करना ही शोभता है।

तो ईश्वर द्वारा दिये गये ज्ञान का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि आज लाखों नर-नारी गृहस्थ में रहकर पवित्र जीवन व्यतीत कर रहे हैं। यद्यपि कई लोग इसे असम्भव या मर्यादा के प्रतिकूल मानते हैं। हाँ विकारी गृहस्थ की मर्यादाओं के तो ये प्रतिकूल है ही परन्तु ईश्वर द्वारा स्थापित पावन गृहस्थ आश्रम की मर्यादाओं के अनुकूल है, परन्तु रात-दिन विकारी चिन्तन में लगे मनुष्य के लिए इसे स्वीकार करना अवश्य ही कठिन लगता होगा।

ईश्वर प्रदत्त ज्ञान ही सम्पूर्ण व सर्व धर्मावलम्बियों के लिए मान्य—

यों तो प्रत्येक धर्म के अनुयायी अपने-अपने ज्ञान को सम्पूर्ण सत्य ही मानते हैं। वेद-वादी भी वेदों को सम्पूर्ण ज्ञान की पुस्तकें मानते हैं, परन्तु निष्पक्ष रूप से चिन्तन करने पर सबका दर्शन उलझा हुआ व अपूर्ण ही दिखाई देता है। "सम्पूर्ण ज्ञान मनुष्य को सम्पूर्ण बनाता है"—यही सम्पूर्ण ज्ञान होने का प्रमाण है। परन्तु कोई भी दर्शन सभी प्रश्नों का सरल समाधान नहीं देता, खोजें जारी हैं, लोग एक दर्शन छोड़कर दूसरे पर जाते हैं, परन्तु प्यास ज्यों की त्यों ही है।

ईश्वर द्वारा दिया ज्ञान सम्पूर्ण है, उसको लेने वाले सम्पूर्णता की ओर चल पड़े हैं, उन्होंने विकारों का त्याग प्रारम्भ कर दिया है, उनके कर्मों में श्रेष्ठता आने लगी है। उस ज्ञान में धर्म का भेद-भाव नहीं, बाह्य आडम्बर, कर्म-काण्ड, हवन, पूजन भी नहीं। उसमें सभी धर्म वालों को समान अधिकार प्राप्त हैं। उनके ज्ञान में ऐसे सिद्धान्त हैं, जिनका पालन प्रत्येक धर्मावलम्बी खुशी से करके अपने लक्ष्य को पा सकता है।

परमात्मा ही सम्पूर्ण योग सिखाते हैं—

आज तक प्रचलित किसी भी योग द्वारा न तो मनुष्य आत्मिक स्वरूप में ही स्थित होता है और न ही उसका सम्बन्ध परमात्मा से जुटता। यद्यपि ऋषियों ने भी आत्मा व परमात्मा के मिलन को ही योग कहा परन्तु वह मिलन कैसे हो—यह स्पष्ट नहीं हो सका।

परन्तु स्वयं परमात्मा सत्य राजयोग सिखाते हैं। इसी योग को बल कहा है, क्योंकि इससे ही आत्मा को सर्व शक्तिवान से शक्ति प्राप्त होती है और मनुष्य सहज भाव से निर्विकारी बन जाता है। सम्पूर्ण योग तो केवल सम्पूर्ण परमात्मा ही सिखाते हैं, कोई भी अपूर्ण मनुष्य नहीं।

ईश्वर द्वारा ही ईश्वर को जाना जा सकता है

विद्वानों से पूछा—आप भगवान को जानते हो? उत्तर मिला—जान रहे हैं। आप भगवान को मिले हैं? उत्तर मिला—प्रयास जारी है। ये

उन स्पष्ट वक्ता विद्वानों के उत्तर हैं जो निरंहकारी हैं व अपनी अप्राप्ति को सहर्ष स्वीकार करते हैं।

उनका उत्तर सत्य है क्योंकि "ईश्वर को ईश्वर द्वारा ही जाना जा सकता है"। उस द्वारा उसका ज्ञान सुनकर हमने उसे जाना है व पाया है। इसमें न तर्क की बात है, न अनुमान है। विद्वान अवश्य सोचते होंगे कि ये ब्रह्मा-वत्स कितनी बड़ी-बड़ी बातें करते हैं। परन्तु ये मात्र बातें ही नहीं, उनकी अमूल्य प्राप्तियाँ हैं, जो उनकी जन्म-जन्म की तपस्या का फल है।

सृष्टि रूपी कल्प वृक्ष का बीज होने के कारण परमात्मा ही सष्टि के आदि, मध्य, अन्त का ज्ञान देते हैं, कोई मनुष्य नहीं। विद्वानों के लिए तो सृष्टि एक रहस्य ही है।

परमात्मा नारी को ज्ञान-कलश देते हैं—

परमात्मा ने ज्ञान-अमृत का कलश मातृ-शक्ति को प्रदान करके उन्हें शिव शक्ति, असुर संहारिनी बनाया। जो मातृ-शक्ति आज तक पद-दलित थी, उसी के द्वारा परमात्मा नव-सृष्टि रचना का दिव्य कार्य कराते हैं।

यदि परमात्मा आज के विदुषक वर्ग को ही अपने दिव्य कार्य का माध्यम बनाते तो सृष्टि पर दैवी राज्य लाना नितान्त कठिन होता। न तो वे अपनी पुरानी मान्यताओं का ही त्याग कर पाते और न उनमें मातृ-शक्ति जैसी त्याग, स्नेह व पालना की भावना ही पैदा होती।

तो जिन्होंने परमात्मा से सम्मुख वाणी सुनी— "मीठे, मीठे, प्यारे बच्चे" की मधुर ध्वनि ने जिनके अहं भाव को नष्ट कर दिया, ज्ञान द्वारा जिनका जीवन कमल सम खिल उठा, जिनका मन उनको ज्ञान गंगा में स्नान कर पावन हो गया, जा प्रभु-मिलन के रस में लीन हो गये, उन्हें पाकर जिनकी बुद्धि दिव्य हो गई—वे ही ईश्वर द्वारा दिये जा रहे ज्ञान के ज्वलन्त उदाहरण हैं।

और कहाँ वे, जो उनकी एक-एक बूंद के प्यासे, दर्शनों की अभिलाषी, भिक्षुक बनकर उनसे माँग रहे हैं, जंगलों में चक्कर लगा रहे हैं, आशाओं के दीपक जलाये बैठे हैं।

तो हे ऐसे प्रभु प्रेमियों, आओ—तुम्हारा परम-पिता अब तुम्हें बुला रहा है, उसकी शीतल गोद में समा जाओ। कहाँ तुम उसकी क्षणिक आकाश-वाणी को आतुर थे, और कहाँ वह निरन्तर ज्ञान की सरिता बहा रहा है। आओ, ईश्वर की वाणी सुनो और ईश्वरीय सुखों से अपने जीवन को तृप्त कर लो।

जब परमात्मा धरा पर आते हैं तो उनकी उप-स्थिति उनके सर्वशक्तिवान होने का स्पष्ट आभास देती है। उनकी ज्ञान-वीणा सुनकर उनके ज्ञान-सागर होने में संशय नहीं रह जाता। उनके अव-तरित होते ही शान्ति सागर की असीम शान्ति चारों ओर फैल जाती है। उनके आते ही सबके प्रश्न स्वतः ही हल हो जाते हैं। उनके आते ही मनुष्यों के अहंकार दूर हो जाते हैं। उनको मिलते ही आभास होता है कि ये वो ही हमारा परमपिता है जिसे हमने जन्म-जन्म ढूंढ़ा था। उनके मधुर बोल उनके प्यार का सागर होने की अनुभूति कराते हैं। उनमें चुम्बकीय रूहानी आकर्षण रहता है। उनकी दृष्टि पड़ते ही आत्माओं को दिव्य अनुभव होने लगते हैं।

अतः हे प्रभु प्रेमियों! अब उसे यहाँ वहाँ ढूंढ़ो नहीं, आकर उससे अपना जन्म-सिद्ध अधिकार प्राप्त करो। □

शिव भगवानुवाचः

मीठे बच्चे—निर्विघ्न बनकर सेवा करो, न किसी के लिए विघ्न रूप बनो और न किसी भी विघ्न से घबराओ। विघ्न आते हैं आपको पाठ पढ़ाने के लिए न कि हिलाने के लिए। पाठ पढ़कर पक्के हो जायेंगे तो विघ्न लगन में परिवर्तित हो जायेंगे। अगर विघ्न से घबरा गये तो रजिस्टर में दाग हो जायेगा। इसलिए विघ्नों में टाइम वेस्ट न करो, निर्विघ्न सेवा का रिकार्ड बनाओ।

पैगाम शिव का सबको सुनाना है दोस्तो

(अन्तर्राष्ट्रीय युवा वर्ष पर विशेष युवकों के प्रति ईश्वरीय सन्देश)

ब्र० कु० सूरजप्रकाश, सहारनपुर

पैगाम शिव का सबको सुनाना है दोस्तो
अब लौट के घर हमको जाना है दोस्तो
संगम का समय आया सुहाना है दोस्तो
व्यर्थ न हमें ये गँवाना है दोस्तो

मन की गली में थी विकारों की खलबली
ज्ञान जब मिला तो खिली मन की ये कली
मरुस्थल में भी फूल खिलाना है दोस्तो
मुश्किल को अब आसान बनाना है दोस्तो

दो युगों से लग गयी थी माया की नज़र
हम हो गये थे खुद और खुदा से बेखबर
अब मिल गया मन को ठिकाना है दोस्तो
इस मायावी जग को भुलाना है दोस्तो

ओ बहनो ! खुदादोस्त से तुम कर लो दोस्ती
सब काज संवर जाएं इसमें शक नहीं रत्ती
सर्व सम्बन्ध शिव से निभाना है दोस्तो
वो दे रहा स्वर्ग का नज़राना दोस्तो

माया तो मोहिनी रूप बन आयेगी लूटने
देख ज्वालारूप टेक देगी वो घुटने
महावीर बन माया को हराना है दोस्तो
दो युगों के लिये मार भगाना है दोस्तो

विकर्म न हों हमसे याद रखना यह सदा
खानी न पड़े तुमको धर्मराज की सज़ा
हिसाब सब यहीं पे चुकाना है दोस्तो
वहाँ चलेगा न कोई बहाना दोस्तो

प्यारे बाबा ने हमें क्या कुछ नहीं दिया
सौ बार शुक्रिया अरे सौ बार शुक्रिया
उसके ही गीत हर पल गाना है दोस्तो
वो सच्चा साथी भूल न जाना है दोस्तो

जल रही है दुनिया विकारों की आग में
गोते लगा रही है गम के तालाब में
पवित्र बन औरों को बनाना है दोस्तो
बुझे दीपकों को जगाना है दोस्तो

बाप के सपूत हम देंगे यह सबूत
शान्ति का सन्देश देंगे बन के शान्ति-दूत
ओम शान्ति का मन्त्र गुँजाना है दोस्तो
एक बाप को ही मन में बसाना है दोस्तो

तेरे हैं बाबा हम तो सदा तेरे रहेंगे
सजनी बन के सज के तेरे संग चलेंगे
जो वायदा किया उसको निभाना है दोस्तो
सम्पूर्ण बन के हमको दिखाना है दोस्तो

ओ कुमारो, मेरे यारो, हिम्मत नहीं हारो
कौन साथी है तुम्हारा जरा मन में विचारो
याद करे जिसको जमाना है दोस्तो
उसको ही अपना हाथ थमाना है दोस्तो

भर लो झोलियाँ यहाँ तकदीर बँट रही
बीत न जाए कहीं अनमोल ये घड़ी
लुट रहा ज्ञान का खज़ाना दोस्तो
बाद में न तुम पछताना है दोस्तो

काश्यप धूमकेतु का पुनः उदय :
पुनः वही महाभारत का समय !

—रामऋषि शुक्ल, लखनऊ

संसार में आज मानव-जाति विनाश की आशंका से भयातुर है। "हैली" अथवा काश्यप धूमकेतु के पुनः उदय के समाचार ने खलबली पैदा कर दी है। क्या महाविनाश होगा ? तो उसके पहले आत्म रक्षा का और नव-निर्माण का पुरुषार्थ क्यों न हो ? इसका ही मार्ग प्रशस्त करता है और इस चुनौती का ही समाधान प्रस्तुत करता है प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय का जीवन-दर्शन। —सं०

हाल में प्रकाशित अपने एक लेख में आचार्य दिवाकर ने हमारी इस पृथ्वी के लिए संकट-स्वरूप धूमकेतुओं किंवा पुच्छलताराओं के अनिष्ट-कारी प्रभावों का उल्लेख किया है। वर्ष १९८६ में खतरनाक ढंग से जो पुच्छलतारा पथ्वी की कक्षा में आ रहा है उसके संबंध में लेखक का कथन है—"हमें आशंका है कि वर्तमान पुच्छलतारा वृहत् संहिता में वर्णित पांच हजार वर्ष बाद उदय होने वाला काश्यप धूमकेतु है जिसका उदय महा-भारत काल में हुआ था।"

संकट की छाया की ओर संकेत करते हुए लेखक ने आगे लिखा है—"वर्तमान धूमकेतु ८० हजार किलोमीटर की गति से प्रतिदिन चलकर बृहस्पति की कक्षा से १९८६ में पृथ्वी की कक्षा में आ जाएगा और फरवरी १९८६ से अप्रैल १९८६ तक उत्तरी गोलार्द्ध में आंखों से सीधे देखा जा सकेगा। उस समय यह अपना विशालकाय पूंछ का घेरा लिये पृथ्वी के सर्वाधिक समीप से गुजरेगा। छः किलोमीटर व्यास, साढ़े आठ करोड़ किलोमीटर लम्बी पूंछ वाला यह धूमकेतु पृथ्वी से टकरायेगा तो नहीं, परन्तु इसकी विषाक्तता की भयावह प्रतिक्रिया के रूप में भूकम्प, बाढ़, महामारी, मानसिक विक्षोभ एवं महायुद्ध की सम्भावना से इन्कार नहीं किया जा सकता।"

हमारा संसार क्रमशः १९१४—१८ और १९३९—४५ के दो महायुद्ध और उनकी विनाश-लीला देख चुका है। तीसरे महायुद्ध के लिए गोला-बारूद के साथ-साथ जहरीली गैसों और प्राणनाशक वायुज्वालाएँ पैदा करने वाले परमाणु बमों-क्षेप्यास्त्रों का अपूर्व संग्रह एक सर्वविदित तथ्य है। विगत काल के दो महायुद्धों के जो अनुभव हैं उनके आधार पर कहा जा सकता है कि खतरा जब भी आयेगा, अचानक और एकाएक आयेगा। साथ ही, पत्थर के औजारों से लेकर आधुनिकतम शस्त्रास्त्रों तक के निर्माण का इतिहास इस कटु सत्य का साक्षी है कि यद्यपि मनुष्य ने प्रत्येक आयुध का निर्माण आत्मरक्षा की कसम खाकर किया, किन्तु उसने प्रत्येक निर्मित आयुध का प्रयोग विनाशलीला के ही लिए किया। और, ऐसा भी हुआ कि जो भी शस्त्रास्त्र बनाया गया उसका प्रयोग भी अवश्य ही किया गया। प्रत्येक आयुध की नियति रही है उसका इस्तेमाल। कई दशक पहले की बात है, एक महाशक्ति को चुनौती देते हुए दूसरी महाशक्ति के नेता ने व्यंग्यात्मक स्वरों में कहा था कि खाने की मेज पर छुरी-कांटे के रूप में इस्तेमाल करने के लिए हमने आणविक मिसा-इलें नहीं बनायी हैं। अस्तु।

तो, महायुद्ध तो निश्चित है किन्तु उसकी कोई तिथि निश्चित नहीं है। ठीक वैसे ही जैसे कि मनुष्य की 'मृत्यु' निश्चित होती है किन्तु उसकी कोई तिथि निश्चित नहीं होती। हां, घटनाक्रम का स्वरूप और जीवन का परिवेश यह जरूर संकेत देते हैं कि कब क्या घटित होने वाला है। इसी प्रकार, यह तो नहीं कहा जा सकता है कि

लगभग पाँच हजार वर्ष बाद उदित होने वाला कथित काश्यप धूमकेत क्या गजब ढायेगा, किन्तु साथ ही इसमें भी रंचमात्र संशय नहीं कि वह भयानक रूप से दुष्प्रभावकारी होगा । आज मानव-जाति जिन अनेक प्रकार के संकटों से जूझ रही है उनमें एक नयी विपदा इस धूमकेतु के उदय के समाचार से जुड़ जाती है। पर्यावरण प्रदूषण हो या जनसंख्या के विस्फोट की आशंका, नगरीकरण हो या मशीनीकरण, प्राकृतिक साधनों पर अधिकार की होड़ हो या हथियारों का निर्माण, चारित्रिक ह्रास हो या झगड़ालू प्रवृत्तियों की वृद्धि, इन सबको वेगवान या अधिकाधिक अनिष्ट-कारी बनाने की आशंका इस धूमकेतु के उदय के साथ बढ़ती ही है।

धूमकेतु के उदय से लेकर प्राकृतिक प्रदूषण या विकृति तक के समस्त उत्पातों के मूल्य में देखा जाय तो पृथ्वी पर बसने वाले मानव-प्राणी और जीव-सृष्टि का गुण-दोष ही विद्यमान रहा करता है। आज जो स्थिति आयी है वह कोई अप्रत्याशित या अनहोनी नहीं है । पौराणिक साहित्य में आख्यानों में मनुष्य स्वभाव और सृष्टि में होने वाली हलचलों के अन्योन्याश्रित संबंधों की कहा-नियां भरी पड़ी हैं । जैसे कि मनुष्य देवतुल्य और गुणवान होता है तो सृष्टि स्वर्गिक और सुखी होती है और वही मनुष्य आसुरी-दुराचारी-दुर्गुणी बन जाता है तो दुनिया नरक बन जाती है । आज के सन्दर्भों में पौराणिक साहित्य में व्यक्त किये गये विचारों को अलग रख दें तो आधुनिक काल या वर्तमान सदी का एक उपन्यास विशेष अर्थपूर्ण हो जाता है । अमरीकी उपन्यासकार जार्ज आरवेल ने १९४८ में एक उपन्यास लिखा था—वर्ष १९८४ । इस उपन्यास में इस बात का विशद वर्णन है कि किस प्रकार उक्त वर्ष तक राज्य सत्ता और समाज में सत्य के नाम पर असत्य का, नैतिकता के नाम पर पाखण्ड का, न्याय के नाम पर अन्याय का और आदर्शों की लम्बी-चौड़ी बातों के नाम पर छल-फ़रेब का बोलबाला हो जायगा । हम देखते हैं कि वही आज शत-प्रतिशत चरितार्थ हो गया है । हमारे पौराणिक वाङ्मय में ऐसे ही मनुष्य को असुर, ऐसे ही समाज की आसुरी सम्प्र-दाय और ऐसी सृष्टि को आसुरी सृष्टि तथा ऐसी ही दुनिया को नरक के रूप में वर्णित किया गया है।

आचार्य दिवाकर एकमात्र ऐसे लेखक-विचारक नहीं हैं जिन्होंने कि काश्यप धूमकेतु के उदय के सन्दर्भ में महाभारत काल का उल्लेख किया है। भारत सरकार के एक पूर्व शिक्षा मंत्री और पुन: काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डा० के० एल० श्रीमाली ने एक बार कहा था कि वर्त-मान मानव-समाज और महाभारत कालीन समाज का विश्लेषण करने पर इन दोनों में अद्भुत साम्य-सादृश्य दृष्टिगत होता है । यह कहने और सुनने में आज कुछ अटपटा-सा लग सकता है किन्तु वास्तविकता तो यही है कि सभी धर्मों तथा जातियों के पौराणिक साहित्यों में जितने भी वर्णन जल-प्रलय के, संस्कृतियों के युद्धों किंवा विश्वयुद्धों के और प्राकृतिक उत्पातों के मिलते हैं वे एक ही सिलसिले में घटित हुए कथित महा-भारत के संग्राम, जल-प्रलय और प्राकृतिक उत्पातों के अनेक संस्करणात्मक विवरण हैं। यह तथ्य सुनने और जानने में तो लोगों को और भी अधिक आश्चर्यजनक प्रतीत होता है अथवा हो सकता है कि वस्तुत: यह वही महाभारत का समय है जो प्राकृतिक उत्पातों तथा प्रलयावर्तन जैसी भयावनी आशंकाओं के साथ एक बार पुन: इस सृष्टि-जगत में आकर उपस्थित हो गया है । आज नहीं तो कल और वर्तमान सहस्ताब्दि के अन्त के—जिसका अंत होने में अब मुश्किल से १४-१५ वर्ष शेष हैं—शायद काफी पहले ही लोगों को यह सही एहसास होकर रहेगा कि, 'आज का समय वस्तुतः महा-भारत काल जैसा समय नहीं है, प्रत्युत यह वही महाभारत काल है ।'

रात-दिन, ऋतु-चक्र आदि को प्रत्यक्षत: देख-कर भी और 'इतिहास के पुनरावर्तन' का बात

स्वयं ही अनायास ही कहकर भी सृष्टि-चक्र-प्रवर्तन के सत्य की प्रतीति लोगों को नहीं हो पाती, इसे समय की विडम्बना के सिवा और क्या कहा जा सकता है। इस प्रकार के अनेक भ्रम वस्तुत: कथित 'इतिहास-युग' की देन हैं, साहित्य में उतरी मानव-मन की विकृतियों के कुफल हैं जो विशेषत: हजार-दो-हजार वर्षों में क्रमश: गहराते ही गये हैं। अस्तु, मानव-मन के अनेकानेक भ्रमों का नाश करने वाले तो वस्तुतः भगवान या परमात्मा शिव ही हैं जो प्राणियों में आत्म-भाव जागृत कर समस्त संशयों को उच्छिन्न कर दिया करते हैं। किसी मनुष्य को परमात्मा का कार्य अपने ऊपर लेने का दम्भ ओढ़ना भी नहीं चाहिए। तथापि काश्यप धूमकेतु के पुन: उदय और महाभारत काल जैसे महायुद्ध की पुन: आशंका के समाचार सभी विचारशील लोगों को अवश्य झकझोरे बिना नहीं रहेंगे। इन समस्त सन्दर्भों में हमारे परमप्रिय पिताश्री को शिव परमात्मा द्वारा वर्ष १९३७ में कराये गये साक्षात्कार की विशेष प्रासंगिकता हो जाती है। साक्षात्कार यह था कि, 'महाभारत जैसा विनाश आसन्न है जिसके बाद पृथ्वी पर पुन: स्वर्ग का राज्य प्रतिफलित हो जायेगा—सतयुग आ जायेगा।'

युवक तू पूरी करेगा आस !

ब्र० कु० राजकुमारी, मजलिस पार्क, देहली

मुझको है पूरा पूरा विश्वास !
युवक तू पूरी करेगा आस !!

घोर तम के इस मातम को,
करेगा खत्म कर रोशन हर आतम को,

हो के मुक्त दुश्मन विकारों से,
शान्त, स्वच्छ, उजरे विचारों में,

लेगा जरूर अतीन्द्रिय सुख का श्वास !
मुझको है पूरा पूरा विश्वास !
युवक तू पूरी करेगा आस !!

देह नहीं, हो तुम देही-विदेही;
भौतिकता फिर क्यों, करे अशान्त यों ही,

उठ के ऊपर अब मौखिक नारों से,
बन्दूक तीर तलवारों हड़तालों से,

पहन त्याग तपस्या का प्रैक्टिकल में बाना
समझेगा ईश्वरीय प्लैनिंग के राज

युवक तू पूरी करेगा आस !
मुझको है पूरा पूरा विश्वास !!

बन के भुजा ब्रह्मा की, रावण की नहीं
बुझा के आग 'हा ! हा !' की, लगा के नहीं

करेगा उजागर नाम रूहानी बाप का
बनके रत्नागर ज्ञान रत्नों की खान का

फैलाएगा प्रकाश उठो !
ईश्वरीय कुल के चिराग !

मुझको है पूरा पूरा विश्वास !
युवक तू पूरी करेगा आस !!

शुद्ध कमाई और अशुद्ध कमाई के परिणाम में अन्तर

ले०—ब्र० कु० चक्रधारी, दिल्ली

प्यारे बच्चो, भारत के प्राचीन कथा साहित्य में ऐसे बहुत-से आख्यान अथवा बहुत-सी कथाएँ मिलती हैं जिनसे कि सच्ची कमाई और झूठी कमाई के प्रभाव में अन्तर स्पष्ट मालूम हो जाता है। इन कथाओं अथवा ऐतिहासिक उल्लेखों से पता चलता है कि पहले भारत के लोग ईमानदारी में विश्वास करते थे और धोखा-घड़ी तथा शोषण से बचे रहने की कामना वाले थे ! इसी प्रसंग में एक छोटी-सी कहानी आपको इस बार बता रही हूँ।

कहते हैं कि एक गुरु ने अपनी शिष्य मण्डली को दान पर व्याख्यान देते हुए कहा—"सज्जनो, दान की महिमा से हमारे ग्रन्थ भरे पड़े हैं। जरूरतमन्द व्यक्ति की सहायता करना मनुष्य का कर्त्तव्य है। हम किसी पर एहसान करने के भाव से दान नहीं देते; किसी माँगने वाले से पीछा छुड़ाने के लिए भी उसे दान नहीं देते, न ही दानी के रूप में यश प्राप्त करने के लिए दान देते हैं। सज्जनो, महाभारत में कर्ण जैसे दानी का वृत्तान्त पढ़कर मन चकित रह जाता है। यह तो आपने सुना ही होगा कि महाभारत में लिखा है कि जब कर्ण जख्मी हुआ पृथ्वी पर पड़ा मर रहा था तब किसी के दान माँगने पर उसके मन में दान देने के लिए ऐसा तो उत्साह उमड़ पड़ा कि उठ खड़े होने की शक्ति से विहीन होने पर भी उसने पृथ्वी पर खिसक-खिसक कर पास में पड़ी एक ईंट को उठाकर अपना सोने का दाँत तोड़कर जब दान में दिया तब चैन लेकर उसने प्राण छोड़े। परन्तु सज्जनो, ऋषियों ने यह भी साथ-साथ कहा है कि दान पात्र ही को देना चाहिए, कुपात्र को नहीं।"

गुरुजी का यह उपदेश सुनकर एक धनाढ्य व्यक्ति के मन में यह विचार आया कि मुझे भी किसी को दान देना चाहिए। इस विचार से उसने उसी दिन मार्ग में जाते हुए एक नैनहीन भिखारी को बड़ी उमंग से एक अशर्फी दे दी।

परन्तु शाम को जब सेठ जी अपनी दुकान से लौट रहे थे तो उन्होंने देखा कि वही अन्धा भिखारी अपने एक-दूसरे भिखारी साथी को कह रहा था—दोस्त, आज तो मालूम होता है कि कोई एक मूर्ख आदमी मुझे मिल गया था। ऐसा कहते हुए वह नशे में झूम रहा था और खड़े हुए अपने वजन को संभाल रहा था।

उसके साथी ने कहा—"भला यह कैसे कहते हो कि वह मूर्ख था ?"

वह बोला—"उसने मुझे कुछ पैसे या आने देने की बजाय एक पूरी अशर्फी ही दे दी। तो मैंने सोचा कि अच्छा होगा कि आज एक शराब की बोतल ही खरीद कर पी लूँ।"

सेठ जी ने उन दोनों के बीच का यह वार्तालाप सुना और उन्होंने मन में सोचा कि मैं सचमुच ही मूर्ख हूँ कि मैंने ऐसे आदमी को एक पूरी अशर्फी दे डाली। उनके मन में बड़ा खेद हुआ। कि मैंने पात्र को दान नहीं दिया।

अगले ही दिन उसने अपने गुरु जी को सारा वृत्तान्त सुनाया। वह बोला—"महाराज, आप तो दान देने की महिमा कर रहे थे और मैंने आपके प्रवचन से प्रभावित होकर एक अन्धे भिखारी को जरूरतमन्द समझकर खुले दिल से एक अशर्फी दे दी परन्तु शाम को जब मैंने उसका वार्तालाप सुना तो मेरे मन को एक धक्का-सा लगा कि उसने उस अशर्फी से एक शराब की बोतल पी ली और न जाने और क्या-क्या खुराफात की⋯।"

गुरुजी बोले—"अच्छा, तो आज ऐसा करो कि मैं यह चवन्नी तुम्हें देता हूँ। यह यहाँ से जाते ही तुम्हें जो पहले-पहले जरूरतमन्द व्यक्ति दिखाई दे, उसे दे देना और कल मुझे फिर बताना कि क्या हुआ।"

गुरुजी टोपियाँ सीकर बेचा करते थे और उससे जो थोड़ा पैसा उन्हें मिलता था उससे वह अपना गुजारा करते थे। उस थोड़ी-सी कमाई में से जो उन्होंने बचत की थी, उनमें से चवन्नी उन्होंने सेठ जी को दी थी। वह चवन्नी लेते हुए सेठ जी सकुचा रहे थे क्योंकि चवन्नी तो उनके लिए एक छोटी-सी रकम थी। परन्तु गुरुजी की बात में कोई छिपा रहस्य मानते हुए उन्होंने वह चवन्नी ले ली और वहाँ से चल दिये।

रास्ते में उन्हें जो पहला-पहला व्यक्ति मिला, वह फटे पुराने मैले-कुचैले कपड़े पहने हुए कमज़ोर-सा व्यक्ति था जो उदास और निराश दिखाई देता था मानों कि जीवन से थक चुका हो और क्षुधा से पीड़ित हो। उन्होंने वह चवन्नी उस व्यक्ति को दे दी। उस व्यक्ति के लबों पर एक बहुत हल्की-सी मुस्कुराहट आई और चली गई और उसने एक गहरी सांस ली। अपनी आँखें आसमान की ओर करके वह बोला कि हे प्रभु, मैं तुम्हारा किन शब्दों में धन्यवाद करूँ तुमने मुझे आज न केवल भूख से बचा लिया बल्कि एक ऐसी बुराई से भी जो कि आज जीवन में मैं पहली बार मजबूरी की हालत में करने जा रहा था। यह कहकर उसने अपनी झोली को पलट दिया और उसकी झोली में कागज में लिपटा जो बकरे का कुछ माँस था, वह फटे हुए कागज में से जगह-जगह दिखाई देने लगा।

यह सब देख और सुनकर सेठ जी हक्का-बक्का रह गये। उन्हें भेद समझ में नहीं आया। आखिर उन्होंने उस व्यक्ति को कहा—"भाई, इस चवन्नी ने तुम्हें किस बुराई से बचा दिया जो कि जीवन में तुम पहली बार करने जा रहे थे और इस छोटी-सी राशि को पाकर भगवान को जो तुमने बार-बार धन्यवाद किया, उसके पीछे तुम्हारा भाव क्या था और यह जो तुमने झोली से जमीन पर फेंक दिया, यह क्या था और तुमने इसे फेंक क्यों दिया?"

वह व्यक्ति बोला—"आपको मैं अपने दुःख की क्या दास्तान सुनाऊँ। मैं और मेरे अपाहिज माता-पिता कई दिन से भूखे थे और मुट्ठी-भर सत्तु भी माँगने पर भी कहीं से नहीं मिला। लेकिन अब भूख से होने वाली पीड़ा व दुर्बलता हमारे लिए असह्य हो गई थी और हम निकम्मी से निकम्मी चीज जिसे हम खाने के लिए कभी सोच भी नहीं सकते थे, भी अपनी जान बचाने के लिए मुसीबत के मारे हम खाने को तैयार हुए। मैंने रास्ते में एक मरा हुआ बकरा देखा तो मन में एक निकृष्ट विचार आ गया कि इसका ही कुछ माँस काट कर मैं अपने माता-पिता की क्षुधा-अग्नि को कम करने के लिए कुछ तो दूँ। इसलिए मैंने एक नोकीला पत्थर लेकर उसका कुछ माँस काटकर उसे एक पास पड़े कागज में लपेट कर शर्म के मारे झोली में डाल लिया और घर की ओर चल पड़ा। मेरा मन मुझे लानत देते हुए कह रहा था कि जो चीज तुम कभी नहीं खाते थे और दूसरों को भी खाने से मना करते थे, आज तुम उसे भी खाने के लिए तैयार हो गए। तुम अपने जीवन को बचाने के लिए अपने पवित्र नियमों को भी छोड़ने को उद्यत हो गए। तुम्हें धिक्कार है कि तुम सड़क पर मरे पड़े हुए जानवर का एक मांस का लोथड़ा खाने के लिए एक पशु की न्यायीं पेट भरने को प्राथमिकता देकर तुम धर्म भ्रष्ट होने पर भी उतारू हो गए—"इस प्रकार मेरे मन में ग्लानि-सी हो रही थी, एक द्वन्द्व चल रहा था कि ऐसे धर्म-संकट के समय पर आपने आकर मुझे यह चवन्नी दे दी। मेरे लिए इस चवन्नी की कीमत केवल चार आना नहीं, मेरे धर्म की रक्षा हुई है, मेरी पवित्रता जो निष्प्राण हो रही थी, उसे फिर से प्राण मिले हैं। अब मैं इस चवन्नी का सत्तु लेकर अपने माता-पिता की सेवा कर सकूंगा। इसलिए मैं भगवान को बार-बार धन्यवाद कर रहा था।"

यह सुनकर सेठ जी को बहुत प्रसन्नता हुई कि इस चवन्नी के दान से किसी की प्राण रक्षा, धर्म रक्षा हो गई और उससे किसी को सद् निर्णय करने में, सद्विवेक का प्रयोग करने में, सन्मार्ग को

अपनाने में सहायता मिली। लेकिन उनकी समझ में यह नहीं आया कि इस चवन्नी का तो यह सुफल निकला और उनकी अशर्फी से एक मनुष्य पतन को ओर चला गया, आखिर इसका कारण था है ?

इस जिज्ञासा को लिए हुए सेठ जी अगले दिन जब गुरु जी के पास गए तो उनको उन्होंने यह सारा वृत्तान्त कह सुनाया और उनसे पूछा कि दोनों बार के दान के परिणाम में अन्तर क्यों था ?

गुरुजी बोले—"देखो भाई, जहाँ पात्र, कुपात्र का भेद होता है, वहाँ एक दूसरी बात के कारण भी परिणाम में अन्तर पड़ता है। वह दूसरी बात यह है कि जो पैसा दान दिया गया, वह किस प्रकार की कमाई में से दिया गया। अगर अच्छी कमाई में से दान दिया गया होगा तो उससे लेने वाले के मन में अच्छे विचार पैदा होंगे और अगर वो खराब कमाई में से होगा तो उससे भ्रष्ट विचार पैदा होंगे। सेठ जी, अब आप स्वयं से पूछिए कि आपने जिस कमाई में से अशर्फी दी थी, वह कमाई कैसी थी।"

प्यारे बच्चो, सद्गुरु शिव बाबा ने भी सच ही कहा है कि जो ईश्वरीय सेवा में तत्पर हैं अथवा योगाभ्यासी हैं व योग सिखाने के कार्य में लगे हुए हैं, उन्हें भी कम-से-कम अपने भोजन के लिए खराब कमाई से दिया हुआ धन प्रयोग नहीं करना चाहिए।

□

माया का झूठा बंधन

(पृष्ठ १७ का शेष)

रहकर कर्म करे तो पुराने संस्कार भी मिट सकते हैं। तथा वह सदा विजयी बन सकता है। इस नीच संकल्प के कारण ही मनुष्य हारा हुआ है। दीन दुःखी है स्वयं को भिखारी समझता है। या स्वयं को नीच, पापी, दास समझता है और यदि इन्सान अपने संकल्प को ही बदल ले और सदा यही समझता रहे कि वह सर्व शक्तिवान परमात्मा की सन्तान होने के नाते परमात्मा के सर्व गुणों का स्वरूप है। तो उसके अन्दर के सभी नीच संकल्प समाप्त हो जाएँगे तथा इन्सान स्वयं को सर्व शक्ति-सम्पन्न समझने लगेगा और बन भी जाएगा।

इस वास्तविकता को स्पष्ट करने के लिए किसी ने ठीक ही कहा है कि

अनन्त शक्ति सम्पन्नः भिक्षां याचामहे यदि
दैन्यं प्रदर्शयन्तो हि किमाश्चर्यमतः परम्

अर्थात् मनुष्य स्वयं अनन्त शक्ति सम्पन्न होते हुए भी यदि भीख ही माँगता है और सदा दीनता का हो प्रदर्शन करता है तो इससे बढ़कर आश्चर्य की क्या बात है !

○

गीत

ब्र० कु० मोहन, आबू

तेरी वाणी शिव बाबा
हम जन-जन को सुनायेंगे
अन्धकार भरे जग में
ज्योति सबकी जगायगे

१—चरित्र का होगा उत्थान
मानव होगा देव समान
विश्व लेगा तुझे पहचान
जग में होगी तेरी शान
ज्ञान सागर की मीठी बूंदें
विश्व पर बरसायेंगे
तेरी वाणी···

२—तेरी बहती अमृत धार
करेगी सब पे वो उपकार
सुख भरा होगा संसार
सबमें होगा अद्भुत प्यार
तेरा ज्ञान गूँजेगा जब
गुण तेरे सब गायेंगे

—:✲:—

आधार हो विश्व के

ब्र० कु० 'प्रकाश' भोपाल

समाज और देश की कीर्ति और यशस्व के,
तुम युवक हो आधार हो इस अखिल विश्व के।

खुशी और उमंग में तुम फूला और फला करो,
तुम धीर हो, तुम वीर हो चिराग बन जला करो।
हर कार्य में, हर क्षेत्र में तुम समग्र और समीष्ट हो,
पवित्रता के बल से सदा सफल और अभीष्ट हो।
प्रतीक तुम ही तो बने त्याग और तेजस्व के,
तुम युवक ही आधार हो इस अखिल विश्व के।

नवचेतना, नवजागृति का प्रयास हो नया नया,
लिख डालो श्रम से कोई इतिहास अब नया-नया।
जोश है, शक्ति है नवरक्त का प्रवाह है,
समाज के हर वर्ग की तुम्हीं पर निगाह है।
शील भी सुशील भी और प्रतीक हो ओजस्व के।
तुम युवक ही आधार हो इस अखिल विश्व के।

तप्त पाप त्रासदी से मानवी पुकारती,
उठो लाल, उठो वीर यह भारती पुकारती।
दुखी अशान्त आत्माएँ रोती चीत्कारती,
दया और शान्ति की भीख है वो माँगती।
सुख-शान्ति उन्हें दान दो त्यागी बनो सर्वस्व के,
तुम युवक ही आधार हो इस अखिल विश्व के।

माया का झूठा बंधन

ब्र० कु० बलदेवराज, किशनपुरा

ऊँटों के काफिले को चलते-चलते शाम पड़ गई, सामने एक गाँव नज़र आ रहा था, रात्रि व्यतीत करने के विचार से काफिला गाँव की ओर चल दिया। वहाँ चल कर एक सराय में रात्रि बिताने का विचार हुआ। सभी ऊँटों को खूंटियाँ गाड़ कर रस्सों से बाँध दिया गया, लेकिन एक ऊँट की खूंटी और रस्सी कहीं रास्ते में गिर गई थी, उसे बाँधने की समस्या ऊँटों के सौदागर के सामने थी। वह सराय के मालिक के पास गया और उससे ऊँट को बाँधने के लिए रस्सी तथा खूंटी की माँग की, परन्तु सराय के मालिक के पास न रस्सी थी न खूंटी थी। उसने कहा मेरे पास न रस्सी है, न खूंटी है। परन्तु तुम जाकर उस ऊँट को खूंटी गाड़ कर रस्सी से बाँध दो। सौदागर ने बड़ी हैरानी से पूछा कि खूंटी नहीं, रस्सी नहीं, तो मैं कैसे ऊंट को बाँध दूँ। सौदागर के ऐसा कहने पर सराय का मालिक उसके साथ हो लिया और वहाँ जाकर उसने ऐसे ही एक हाथ धरती के ऊपर रक्खा जैसे खूंटी पकड़ कर रक्खा जाता है। तथा दूसरे हाथ से हथोड़े मार कर खूंटी गाड़ने जैसी हरकत की फिर उसने ऊँट के गले में हाथ घुमाया जैसे कि गले से रस्सी खोल रहा हो, फिर उसने खूंटी के साथ रस्सी बाँधने जैसी हरकत की और चला गया। ऊँट ने समझा कि मालिक उसे बाँध गया है तथा वह सारी रात वहाँ से नहीं हिला। सुबह होने पर सौदागर ने सभी ऊँटों की रस्सियाँ खोली व खूंटियाँ उखाड़ी तो सभी ऊँट उठ कर चलने लगे लेकिन वह जो ऊँट था जिसकी रस्सी व खूंटी नहीं थी वह वैसे ही बैठा रहा। सौदागर फिर सराय के मालिक के पास जाकर कहने लगा कि मालिक वह ऊँट तो उठता नहीं, बाकी सब ऊँट तो चलने को तैयार खड़े हैं तो मालिक ने पूछा कि क्या तुमने उसकी रस्सी खोली व खूंटी उखाड़ी ? सौदागर ने हैरान होकर कहा कि उसकी रस्सी व खूंटी है ही नहीं, तो उखाड़नी क्या थी। मालिक उस सौदागर के साथ गया और जाकर फिर वैसे ही खूंटी उखाड़ने और रस्सी खोलने जैसा अभिनय किया। ऊँट फट से उठकर चलने लगा। इस प्रकार मालिक ने सौदागर को समझाया कि बेशक हमारी नज़र में खूंटी व रस्सी नहीं है। परन्तु ऊँट के लिए रस्सी तथा खूंटी है वह समझता है कि वह बँधा हुआ है और जब उसकी रस्सी खोली गई व खूंटी उखाड़ी गई तभी उसने समझा कि वह आज़ाद हो गया है। और वह उठकर चलने लगा।

ठीक यही हालत आज इन्सान की है वह भी समझता है कि वह माया के बंधन में बँधा हुआ है तथा विषय-विकारों में फँसा हुआ है और स्वयं को स्वतन्त्र नहीं समझता है। यदि ऊँट को भी इस बात का ज्ञान हो जाता या करा दिया जाता तो वह भी स्वयं को स्वतन्त्र समझ लेता। ऊँट वास्तव में बँधा हुआ नहीं था लेकिन उसके मन में यह संकल्प था कि वह बँधा हुआ है। या यूँ कहिए कि वह संकल्प से बँधा हुआ है। ठीक उसी प्रकार इन्सान भी वास्तविक रूप में बँधा हुआ नहीं है बल्कि उसके मन में संकल्प ही है कि वह बँधा हुआ है। जब तक मनुष्य के मन में यह संकल्प है कि वह विषयों में फँसा हुआ है या माया से हारा हुआ है, तब तक वह बन्धन में ही रहेगा और मायाजीत नहीं बन सकता। इसके विपरीत यदि वह यह संकल्प कर ले कि वह स्वतन्त्र है, उसे किसी प्रकार का कोई बन्धन नहीं और काम क्रोधादि कोई भी विकार उसे प्रभावित नहीं कर सकते, तो इस संकल्प मात्र से ही वह मायाजीत बन सकता है। और सारा दिन इस विजयी स्वरूप की स्थिति में

(शेष पृष्ठ १५ पर)

स्कूल, कालेज की छात्राओं के लिए इन्दौर में एक अलौकिक होस्टल

दो वर्ष पूर्व छात्रावास के आरम्भ में कन्याओं का प्रथम ग्रुप

इन्दौर में 'ओम शान्ति भवन' से लगभग एक किलोमीटर की दूरी पर समीप शांत वातावरण में अपने ही निजी भवन में विगत दो वर्षों से स्कूल, कालेज में पढ़ने वाली कन्याओं के लिए "दिव्य जीवन कन्या छात्रावास" (Divine Life Girl's Hostel) कार्यरत है। वर्तमान समय इसमें उड़ीसा, राजस्थान, मध्यप्रदेश, बिहार आदि प्रांतों की लगभग २० कन्याएं अपनी लौकिक पढ़ाई पढ़ते हुए जीवन को अलौकिक बना रही है। ईश्वरीय ज्ञान एवं राजयोग में चलने वाली कन्याओं के लिए स्कूल, कालेज के दूषित वातावरण से बचाव के लिए होस्टल बहुत ही उपयोगी है। ऐसी कन्याओं के माता-पिता भी ज्ञान योग में चलते हैं तो वे भी चिन्ता मुक्त एवं निश्चित रहते हैं। होस्टल में रहने वाली कन्याओं को विशेष प्रशिक्षण प्राप्त होता है जिसमें उनके अंदर दिव्य संस्कारों का निर्माण होता है और उन्हें अपने आगामी जीवन में अग्रसर होने के लिए विशेष बल मिलता है। एकाग्रता की अनुभूति के कारण वह अपनी पढ़ाई में भी बहुत प्रवीण हो जाती हैं।

अगला शिक्षा सत्र जून ८५ के प्रथम सप्ताह से प्रारंभ हो जावेगा। अतः ज्ञान में चलने वाली ७वीं कक्षा से कालेज तक पढ़ने वाली कन्याओं के लिए होस्टल में प्रवेश की अनुमति मई ८५ के अन्त तक मिल जावेगी। प्रवेश के लिए कन्याओं के माता-पिता का ज्ञान में चलना अनिवार्य है। होस्टल में बढ़ती हुई संख्या को देखते हुए एक नए भवन के निर्माण की योजना चल रही है जिसके लिए ओम शान्ति भवन के पास ही शासन से जमीन भी मिल गई है। होस्टल में सीमित सीटें हैं। अतएव शीघ्र ही आवेदन पत्र भेजकर अपनी सीट सुरक्षित कर लें। अधिक जानकारी प्राप्त करने हेतु ओम शान्ति भवन न्यू पलासिया इन्दौर, फोन—२११०१ पर पत्र व्यवहार द्वारा सम्पर्क करें।

सहज योगी बनने की सहज विधि

(पृष्ठ २० का शेष)

डोर को दुनिया की कोई ताकत तोड़ नहीं सकती। उसकी स्थिति ऐसी हो जाती है कि जिधर देखता हूँ तू ही तू है। उसके मन में यह गीत हरदम निकलता है—

तुम्हीं सामने हो मेरे नज़र मैं जिधर घुमाऊं।
तुम्हें भूलना भी चाहूँ तो भूल भी न पाऊँ॥

सहज योगी बनने की सहज विधि

ले०—ब्र० कु० सुधा, शक्ति नगर, दिल्ली

परमप्रिय शिव बाबा द्वारा वर्तमान पुरुषोत्तम संगम युग पर पढ़ाई जा रही आध्यात्मिक पढ़ाई का एक मुख्य विषय 'योग' है। इसीलिए लगभग प्रतिदिन शिव बाबा अपनी अमृत वाणी में ये महावाक्य उच्चारण करते कि योग एक अति गुह्य विषय है। अथवा योग मूल विषय है अथवा योग का विषय अति सहज भी है और अति कठिन भी परन्तु फिर भी बाबा ने मुख्यतः इसे 'सहज राजयोग' ही नाम दिया है। अब प्रश्न यह उठता है कि शिव बाबा तो इसे सहज योग का नाम देते हैं परन्तु क्या हम सहज योगी बने हैं ? उत्तर मिलता है कि कभी-कभी तो ऐसा अनुभव होता है कि योग अति सहज है, मानो कि योग लगाने की आवश्यकता नहीं, योग तो जुटा ही हुआ है परन्तु यह अनुभव सदा नहीं रहता और कई बार तो पुरुषार्थ करने पर भी उसमें सफलता नहीं होती। मन की तार को उस पावर हाउस से जोड़ने की कोशिश करते हैं परन्तु जुड़ ही नहीं पाती। ऐसी स्थिति में न तो समर्थ संकल्प चलते हैं और न व्यर्थ; खाली-खाली-सा (Vacuum) महसूस होता है। ऐसी अवस्था में यह विचार अवश्य चलता है कि आखिर हम सहज योगी व सदा योगी कैसे बनें ? बाबा ने समय-प्रति-समय अपने अनमोल महावाक्यों में कई युक्तियाँ स्पष्ट की हैं। आइये तो हम भी उनमें से एक-दो पर विचार कर लें :

१. ईश्वरीय कर्त्तव्य में जी-जान से सहयोगी बनो— अनुभव कहता है कि ईश्वरीय कार्य में पूर्णरूपेण सहयोगी बनने वाला सहज ही योगी बन जाता है। उसे योग लगाने की मेहनत नहीं करनी पड़ती, वह स्वतः और निरन्तर योगी हो ही जाता है। क्यों और कैसे ? इसका उत्तर समझने के लिए मुझे बचपन में पढ़ी हुई अब-बिन-आदम की कहानी याद हो आई है। कहते हैं एक बार अबु-बिन-आदम नामक एक व्यक्ति रात को सोया हुआ था। स्वप्न में उसने एक फरिश्ते को देखा जो कुछ नोट कर रहा था। उसने फरिश्ते से पूछा कि वह क्या लिख रहा है। पूछने पर फरिश्ते ने बताया कि वह उन व्यक्तियों की सूची तैयार कर रहा है जो भगवान को प्यार करते हैं। अबू-बिन-आदम ने पूछा कि क्या उसका नाम उस सूची में है ? फरिश्ते ने 'न' में सिर हिलाया और लोप हो गया। अगली रात्रि को उसे फिर वही फरिश्ता स्वप्न में दिखाई दिया। आज भी वह कुछ लिख रहा था। अबू-बिन-आदम ने उससे पूछा कि आज वह क्या लिख रहा है ? फरिश्ते ने कहा—"मैं आज उन व्यक्तियों की सूची तैयार कर रहा हूँ जिन्हें भगवान बहुत प्यार करते हैं।" अबू-बिन-आदम ने सोचा कि इस सूची में भी उसका नाम नहीं होगा। परन्तु जब फरिश्ते ने उसे बताया कि उसका नाम उस सूची में सबसे पहले नम्बर पर है तो उसे बहुत आश्चर्य हुआ। फरिश्ते ने कहा कि "भगवान उसको प्यार करते हैं जो भगवान के बच्चों से प्यार करते और उनकी सेवा करते हैं।" बाबा भी तो यही कहते हैं कि सेवाधारी बच्चे ही मेरे दिलतख्तनशीं होते हैं। अतः ईश्वरीय कार्य में सहयोगी बनना माना ही ईश्वरीय सेवा में तत्पर हो जाना और ईश्वरीय सेवा माना ही ईश्वर के बच्चों की सेवा। ईश्वर का कर्त्तव्य ही है विश्व परिवर्तन करना अर्थात विश्व नव निर्माण करना। जो आत्माएँ इस विश्व नव-निर्माण के कार्य में जुट जाती हैं, उन्हें शिव बाबा बहुत प्यार करते हैं और बहुत याद करते हैं। और जिन्हें स्वयं परमात्मा याद करते, उसे परमात्मा को याद करने की मेहनत नहीं करनी पड़ती, उसकी बुद्धि की डोर खिंची ही रहती है।

परन्तु सहयोगी बनने का मतलब यह नहीं कि

हम यथा सम्भव यथा शक्ति सहयोगी बनें—जैसे कोई कहे कि समय मिलेगा तो सेवा करेंगे, धन होगा तो सेवा में लगायेंगे, तन चलेगा तो कर लेंगे लेकिन नहीं, हमें जितना अधिक-से-अधिक हो सके, अपना समय, शक्ति, धन उस श्रेष्ठ सेवा के कार्य में लगाना चाहिए। क्योंकि जहाँ हमारा धन, समय व शक्ति लगती है, वहाँ मन अवश्य ही जाता है। यही कारण है कि केवल लौकिक कर्मों, लौकिक सम्बन्धों, लौकिक व्यवहार में तन धन व समय देने से मन भी बार-बार इस लौकिक दुनिया के व्यक्तिओं और वस्तुओं की ओर भागता है और फिर शिकायत होती है कि योग लगता नहीं, हम सहज योगी कैसे बनें। अतः इसीलिए शिव बाबा कहते हैं कि 'सहयोगी' योगी है।

२. **समानता सकीपता को लाती है**—शिव बाबा के महावाक्यों में हम यह भी सुनते आये हैं कि समीप आने के लिए समान बनना होगा। योगी बनना माना ही परमात्मा का सामीप्य प्राप्त करना। अतः उसके समीप जाने के लिए उसके समान बनें। अगर योग का अर्थ प्रभु-मिलन से लें तो उससे मिलने (To meet) के लिए उससे मिलना (To become alike) होगा। जितना-जितना हम उसके समान होते जायेंगे, उतना उसके समीप होते जाएंगे। वैसे भी हम दैनिक जीवन में देखते हैं कि दो व्यक्तियों की दोस्ती तभी होती है अर्थात् उनमें समीपता तभी होती है जब दोनों के स्वभाव में, कर्त्तव्यों में समानता हो। तो अब प्रश्न यह उठता है कि शिव बाबा के समान बनने का अर्थ क्या है?

शिव बाबा की एक महिमा ऐसी है जिसमें उनके सर्व गुण, सर्व विशेषताएँ समाई हुई हैं। वह महिमा है—सत्यं शिवं सुन्दरं अतः शिव बाबा के समान बनना माना स्वरूप, गुणों और कर्त्तव्यों में सत्यं शिवं सुन्दरं बनना। शिव बाबा 'सत्य' है तो सत्य बनना अर्थात अपने सत्य, अविनाशी स्वरूप में स्थित होना। अपने सत्य स्वरूप की स्मृति हमें निराकारी, निर्विकारी और निरहंकारी बना देती है। शिव बाबा भी तो निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी है। अतः हमें हमारे सत्य स्वरूप की स्मृति हमारी स्थिति को बाप समान बना देती है जिससे आत्मा स्वतः ही उस परम-पिता के समीप आती जाती है। इसी प्रकार 'शिवं' अर्थात कल्याणकारी, मंगलकारी अथवा शुभकारी। शिव बाबा के इस गुण को अपने में धारण करने का अर्थ है अपने संकल्पों, वचनों व कर्मों को कल्याणकारी बनाना। सदा यह चैक करें कि हमारे कर्म तो क्या परन्तु हमारे मन में भी कभी ऐसा अशुद्ध विचार न उठे जिसमें स्वयं अथवा अन्य के अकल्याण की भावना हो क्योंकि हम कल्याण-कारी पिता की सन्तान हैं। और जब आत्मा कल्याणकारी स्थिति में स्थित है तो वह कल्याण-कारी पिता के समीप आती जाती है। इस तरह शिव बाबा के समान 'सुन्दर' बनना माना सुन्दर कर्मों में तत्पर होना। कहावत भी है न कि सुन्दर वह जो सुन्दर कर्म करे। (Handsome is that who handsome does)। शिव बाबा रूप में बिन्दु है पर गुणों का सिन्धु होने के कारण जितने श्रेष्ठ और उच्च उनके कर्त्तव्य हैं, अन्य किसी के नहीं। उन्हीं के लिए कहते—कि वह पतित पावन है, बिगड़ी को बनाने वाला है, स्वर्गिक नई दुनिया का रचयिता है, नर को श्री नारायण व नारी को श्री लक्ष्मी बनाने वाले हैं, अपकारी पर भी उप-कार करने वाले हैं...। अतः सुन्दर बनना माना अपने समय, शक्ति, धन, संकल्प, श्वास को इन श्रेष्ठ कर्त्तव्यों में लगाना। इस प्रकार शिव बाबा के समान बनने वाली आत्मा सहज ही योगी बन जाती है। ऐसी आत्मा को योग लगाने की मेहनत नहीं करनी पड़ती। उसका योग ऐसा तो उस परमपिता, परमशिक्षक, परमसद्गुरु से जुट जाता है कि कोशिश करने पर भी टूटता नहीं। क्योंकि गुणों में, स्वभाव में, कर्त्तव्यों में समान होने के कारण ऐसा प्रेम उनसे जुट जाता है जिस प्रेम की

(शेष पृष्ठ १८ पर)

मितव्ययता : जीवन जीने की कला

ओम प्रकाश मसुरिहा, बांदा

सुकरात नाम के एक महान दार्शनिक हुए हैं। वे अक्सर बाजार में घूमते रहते थे, किन्तु अधिकतर अवसरों पर कोई भी सामान नहीं खरीदते थे। लोग उनसे पूछते, "बाबा आप कोई सामान तो खरीदते नहीं, तो बाजार क्यों जाते हैं।"

सुकरात ने उल्टा ही लोगों से प्रश्न किया कि अच्छा आप लोग ही बतायें, "आप बाजार क्यों जाते हैं?" तो लोगों ने जवाब दिया, "हम लोग अपने लिये सामान खरीदने हेतु बाजार में जाते हैं और सामान खरीदते हैं, किन्तु साथ ही साथ हमारी दृष्टि नये सामान पर भी पड़ती है, जो पहले नहीं देखे होते, तो मन में यही संकल्प लेकर वहां से वापस जाते हैं कि इन्हें भी खरीदना है, फिर उसके लिये भी उपयुक्त धन अर्जित करने में लग जाते हैं। जब वह धन एकत्रित हो जाता है तो सामान को खरीदने फिर से बाजार जाते हैं—किन्तु तब तक देखते हैं कि पुनः बाजार में नवीन-नवीन वस्तुयें आ गयी हैं तो फिर उन्हें खरीदने व उसके लिये आवश्यक धन अर्जन करने का संकल्प लेते हैं और इस प्रकार यह चक्र चलता रहता है।"

लोगों ने सुकरात से पूछा कि बाबा अब आप ही बतायें कि आप यहां क्यों आते हैं, जब कि कोई सामान खरीदते नहीं? "तो महान सुकरात ने उत्तर दिया," मैं बाजार में यह देखने के लिये आता हूं कि मैं किन-किन चीजों के बिना रह सकता हूं। "अहा! कितनी बारीक दृष्टि थी महान् सुकरात की! सुखी रहने का सूत्र "मितव्ययता!" कम से कम वस्तुओं से कार्य चला लेने का श्रेष्ठ संकल्प सादा जीवन, उच्च विचार। कम से कम वस्तुओं के उपभोग से जीवन-यापन करना।

किन्तु आज दुनिया की हालत ठीक इससे उल्टी है। अधिकतर मनुष्य यही सोच रहा है कि मैं कितना अधिक से अधिक इकट्ठा कर लूं, उसके अन्दर लिप्सा व लोभ का भाव इस हद तक बढ़ गया है कि जीवन में उसने नैतिकता, हृदय की निर्मलता, सत्यता व ईमानदारी का दामन छोड़ दिया है। धन व यश की कामना तथा उनकी प्राप्तियों के पीछे इतना उतावला हो रहा है कि उसने उपरोक्त सद्विचारों को तिलांजलि देकर हर प्रकार के दुराचार, अनाचार, भ्रष्टाचार, बेईमानी, दुष्टता, हिंसा इत्यादि के सहारे धन-सम्पत्ति, नाम व यश प्राप्त करने को ही एकमात्र जायज हथियार समझ लिया है। मानवता, देश, और समाज के लोगों की मान्यतायें वर्तमान समय में तेजी से विकृत होती जा रही हैं। मानव अब इस हद तक पतित हो चुका है कि हर प्रकार के भ्रष्ट साधन अपना कर भी वह अपनी इच्छा पूर्ति करना चाहता है। आज के आधनिक, उन्नतिशील व सभ्य कहे जाने वाले मनुष्य ने अपनी आवश्यकताओं को इतना अधिक बढ़ा दिया है कि उसकी पूर्ति हेतु दिन-रात लगा पड़ा है। इस प्रकार सभी लोग अपनी-अपनी उन्नति का ढिंढोरा पीटकर एक दूसरे को काँटे गोंच रहे हैं। और जो इस दौड़ में पिछड़ रहे हैं, उनमें असन्तोष उपज रहा है। जो धीरे-धीरे सार्वजनिक क्रोध व हिंसा का रूप लेता जा रहा है।

ऐसा लगता है कि महान सुकरात की बात "मैं किन-किन चीजों के बिना रह सकता हूं?" बहुत पीछे रह गयी है। इस प्रकार के श्रेष्ठ विचार इस दुनिया रूपी नक्कारखाने में तूती की आवाज की तरह हैं। इस लोभ की प्रवृत्ति ने जो समाज

(शेष पृष्ठ २६ पर)

जीवन देकर भी सन्तोष न हुआ

ब्र० कु० आत्मप्रकाश, माउण्ट आबू

नरेश बचपन से ही अपने को बहुत चतुर समझता था, यद्यपि पढ़ने-लिखने में वह कोरा ही था। जीवन के प्रारम्भ में वह अपने सभी साथियों पर अच्छा रोब जमाए रहता था···

परन्तु नरेश अब बड़ा हुआ, उसका शिक्षण काल भी बहुत पीछे रह गया, अब उसकी परीक्षाओं का काल प्रारम्भ हुआ। अब उसका रोब दूसरों पर नहीं बल्कि दूसरे उस पर रोब जमाने लगे। धीरे-धीरे नरेश का मनोबल गिरने लगा··· लोगों ने उस पर टोंट करना शुरू किया। कभी वह दसरों पर टोंट किया करता था, परन्तु उसे यह पता नहीं था कि इस टोंट का असर दूसरों पर क्या होता है। परन्तु अब स्वयं पर टोंट कसे जाते देख, उसे धीरे-धीरे समझ में आने लगा कि उसने बचपन से ही कितना गलत पथ चुना था।

जीवन आगे बढ़ने लगा, दिन गुजरते गये··· नरेश का संसार में प्रवेश उसे बेचन करने लगा। विद्यार्थी काल उसने बुरे संग में गँवा दिया था, बुद्धि के विकास का समय उसने कौड़ियों के भाव लुटा दिया था, अब वह स्वयं को बौद्धिक बल व बौद्धिक विकास से दर अनुभव करने लगा। उसकी बेचैनी बढ़ी, जीवन की हर परिस्थिति उसे रंग में भंग डालने वाली लगने लगी। वह खीज उठा, परेशान होकर वह कभी-कभी कह उठता···क्या है ये जीवन इससे तो अच्छा यहाँ से कहीं दूर चला जाऊँ।

समस्याओं के घेरे ने नरेश को बेचैन कर डाला, वह इन विघ्नों से भागना चाहता था। उसमें साहस नहीं था जीवन की इन लहरों को पार करने का···

किसी ने उसे राय दी गीता पढ़ो। नरेश धार्मिक भावनाओं से तो कोसों दूर था परन्तु परिस्थितियों ने उसे गीता पढ़ने के लिए विवश किया। मन को कुछ चन मिली परन्तु विचार प्रवाह बदला, इस संसार को छोड़ चलूं···इसमें सुख नहीं है···पड़ोसियों का सुखी जीवन उसे और ही परेशान कर देता था परन्तु उसने यह कभी नहीं सोचा था कि ये सुखी क्यों हैं ?

वराग बढ़ा, खोज बढ़ी, नरेश सदा अकेला-अकेला उदास सा दिखाई देता···आखिर एक दिन एक महात्मा अपने कुछ शिष्यों के साथ गाँव में आये और नरेश ने भी उनके साथ राह ली, नरेश को पता नहीं था कि ये त्याग व तपस्या का जीवन भी कुछ कठिन होगा।

अब नरेश एक आश्रम में रहने लगा था। एक महात्मा, १०-१२ शिष्य—बड़ा आश्रम और उसकी सेवा परन्तु नरेश ने शान्ति की श्वाँस ली संसार का बोझ मानो उससे उतर गया हो··· न उसे अब कोई कुछ कहने वाला, न कोई टोंट करने वाला, कुछ दिन उसके सुखपूर्वक बीते और उसने सन्तोष महसूस किया, उसे एहसास हुआ कि सही अलौकिक सुख क्या है···

अपनी कार्यक्षमता के कारण नरेश महात्मा के काफी समीप रहने लगा, महात्मा भी उसे बहुत प्यार करते थे। आश्रम के नियमों का वह तत्परता से पालन करता था, परन्तु नरेश से साधना नहीं होती थी। बचपन से ही उसका मन चंचल जो था, हाँ सेवा में उसने अवश्य कुशलता प्राप्त कर ली थी···

महात्मा बड़े सज्जन पुरुष थे वे नरेश को प्यार से बुला कर कहते बेटा—"साधना का जीवन में बहुत महत्व है। केवल सेवा ही जीवन में सन्तोष नहीं देगी। साधना की सुगन्ध के बिना ये सेवा सुगन्धहीन है। अतः बेटा साधना पर ध्यान दो।"

परन्तु नरेश का चंचल मन उसे बठने ही नहीं देता था, तो भी महात्मा उसे प्यार करते थे··· परन्तु नरेश उनके प्यार का गलत प्रयोग करने लगा। वह अपने साथियों से गलत व्यवहार करने

लगा। अहंकार ने भी उसकी बुद्धि को पुन: मलीन करना प्रारम्भ किया। वह बात-बात में दूसरों को कह देता था—तुम तो बुद्धू हो, तुम तो पागल हो क्योंकि उसे किसी का भी डर नहीं रह गया था। वह सोचता था—महात्मा जी तो मेरे हैं··· कोई मेरा क्या कर लेगा और वह दूसरों की शिकायतें भी महात्मा से करता रहता था परन्तु उसे नहीं पता था कि अनेक पवित्र आत्माओं के श्रापित संकल्प पुन: उसकी नींद फिटा देंगे···

महात्मा जी तथा कई साथियों ने नरेश को कई बार समझाया कि नरेश—ये अहं मनुष्य को पतन की ओर ले चलता है। इस क्षणिक जिन्दगी में दूसरों को सुख दो, मुख से अमृत वचन कहो··· उसके व्यवहार में थोड़ा परिवर्तन आता था परन्तु कुछ दिन बाद फिर वही बात। उसका व्यवहार शनै: शनै: कठोर व रूखा होता गया···इस प्रकार वर्ष बीतने लगे···

नरेश अधिक चिड़चिड़े स्वभाव का होने लगा, वह किसी को भी सम्मान नहीं देता था। वह बात-बात में बिगड़ जाता था, दूसरों को नीचा दिखाने की कोशिश करता था। परन्तु अपने आश्रम की व महात्माजी की बहुत सेवा करता इसलिए अभी भी वह महात्मा के प्यार का पात्र बना हुआ था···

अब उसके दुर्व्यवहार से उसके सभी साथी नाराज हो चुके थे, सभी उससे दूर रहना चाहते थे। जहाँ जाओ, वहाँ उसकी चर्चा रहती थी, इससे आश्रम का वातावरण भी तनावपूर्ण हो गया था। बात-बात पर वह दूसरों से लड़ जाता था··· परन्तु अभी तक उसे अपनी गलतियों का एहसास नहीं था, वह सदा ही दूसरों को दोष देता था और अपने को सत्य समझ कर गौरव से रहता था।

परन्तु इस प्रकार उसने सभी का स्नेह व आशीर्वाद खो दिया, सभी उससे नफरत करने लगे, सभी उसकी बुराई करने लगे। यहाँ तक कि सभी सोचते थे कि नरेश अब आश्रम से कहीं दूर चला जाए ताकि यहाँ शान्ति हो क्योंकि उसने वर्षों की अर्जित की हुई आश्रम की शान्ति नष्ट कर दी थी।

इस प्रकार नरेश के वही दिन पुन: लौट आये। एक बार फिर उसने स्वयं को अति उदास व अकेला महसूस किया। धीरे-धीरे उसकी खुशी नष्ट हुई और तनाव बढ़ा। और फलस्वरूप प्रेम की प्यास भी बढ़ी।

नरेश अकेला बैठा सोचता था···क्या भाग्य है मेरा। सब कुछ छोड़ दिया, जीवन ही बलिहार कर दिया परन्तु जीवन में सन्तोष नहीं हुआ··· ये सभी लोग मेरे पीछे क्यों पड़े हैं, मैंने इनका क्या बिगाड़ा है परन्तु उसे अभी भी यह आभास नहीं हो पाया था कि इस सबका कारण मैं स्वयं हूँ।

आखिर अशान्ति की भी सीमा होती है··· परन्तु नरेश की अशान्ति अब असहनीय हो चुकी थी परन्तु वह इसके कारण नहीं जान पाया। आखिर उसने राह बदलने की सोची···"परन्तु कहाँ जायेगा नरेश तू" भीतर से आवाज आने लगी···संसार तो तू देख चुका वहाँ चैन नहीं है, आश्रम में भी तुम्हारे मन को ठिकाना नहीं, अब तू कहाँ जाएगा···

आखिर उसने अन्तिम निर्णय लिया—आश्रम का संन्यास, पुन: अकेला जीवन प्रारम्भ हुआ और अब संसार नीरस था, अब नरेश को पुन: केवल स्वयं का जीवन चलाने के लिए ही रात-दिन मेहनत करनी पड़ी···परन्तु सच्चा सुख उसके लिए बहुत ही पीछे रह गया था।

यदि वह बचपन से ही बुरे संग से बचकर रहता, विद्या अर्जित करता, अहंकारी न बनता और श्रेष्ठ पथ अपनाता, आश्रम में सभी से श्रेष्ठ व्यवहार रखता तो नरेश सचमुच नरेश होता, वह अनेकों का प्रेरक होता। या तो महान योगी होता या वैभव सम्पन्न सम्पूर्ण सुखी···

□ □

सूक्ष्म सेवाएं तथा राजयोग अनुभूति

ब्र० कु० रमेश तथा ब्र० कु० उषा, गामदेवी—बम्बई

ज्ञान, गुण एवम् शक्ति यह तीन अति सूक्ष्म बातें हैं। ज्ञान-दान, गुणदान तथा शक्तिदान आज के संगमयुग की बहुत बड़ी ईश्वरीय सेवा है। अब तक हमने सिर्फ विशेष रूप से ज्ञानदान के प्रयोग किये परंतु अब गुणदान तथा शक्तिदान करना-कराना है। ज्ञानदान से गुणदान तथा शक्तिदान थोड़ा कठिन है। ज्ञान-दान तो सभी ज्ञानवान कर सकते हैं परंतु सभी ज्ञानी गुणदान तथा शक्तिदान नहीं कर सकते। गुणदान देने से पहले गुण स्वरूप तथा शक्तिस्वरूप बनने की आवश्यकता है। तत्पश्चात् ही हम गुणदान तथा शक्तिदान देने के पात्र बन सकते हैं।

आज तक हम सबने योग का ज्ञान दिया। संबंध क्या है और वह परमात्मा से कैसे जोड़ें इस पर अनेक स्थानों पर बहुत ही सुन्दर शिविरों का आयोजन भी किया परन्तु वर्तमान कलियुगी तमोप्रधान आत्माएँ इतनी अशक्त हो गई हैं कि योग के ज्ञान के आधार से योग की पवित्र पावन शक्ति को समझ नहीं सकतीं और उसके प्रयोग द्वारा स्वयं को बढ़ाने का पुरुषार्थ नहीं कर पातीं। जैसे छोटे बच्चे को स्वयम् की ताकत न होने के कारण मां बच्चे को सब प्रकार का भोजन तैयार करके खिलाती है वैसे ही राजयोग की श्रेष्ठता तथा अनुभूति अब सिर्फ योग के ज्ञान से नहीं होगी परन्तु योग के लाभ क्या हैं, उसके द्वारा गुणवान कैसे बन सकते हैं तथा योग से शक्ति कैसे मिलती है और सर्वशक्तिवान् परमात्मा से मन-बुद्धि की सूक्ष्म तार जोड़कर उस शक्ति के स्रोत या भंडार का अनुभव कैसे करें अर्थात् योग के ज्ञान के अतिरिक्त योग से गुण और शक्ति की प्राप्ति के अनुभव की जरूरत है। गुण एवम् शक्ति के सिर्फ ज्ञान देने से कार्य नहीं होगा किंतु अब गुण एवम् शक्ति की सूक्ष्म अनुभूति करानी होगी। वह कैसे करें?

जामनगर (गुजरात राज्य में) एक सूर्य गृह बना हुआ है। सूर्य की किरणों में अनेक प्रकार की शक्ति है और साथ-साथ प्रकाश अर्थात् रोशनी भी मिलती है। सूर्य-शक्ति के आधार से खेतों में हरियाली होती है और फल-फल भी मिलते हैं। सूर्य की रोशनी के आधार से दिन और रात्रि का हिसाब होता है। ऋतु, वर्षा इत्यादि का निमित्त कारण भी सूर्य है। इन्द्र-धनुष के सप्तरंग हमें अल्हादकता प्रदान करता है और साथ-साथ सप्त रंगों के मिलन के आधार पर बना हुआ उज्वल प्रकाश इस धरा पर छाये तिमिर को दूर करता है। जैसे संगीत के सप्तसुर मनोरंजन के साथ-साथ शक्ति प्रदान करते हैं उसी तरह इन्द्रधनुष के सप्तरंग भी विशेष प्रकार के किरणों और इन्हों द्वारा अनेक प्रकार के रोगोपचार होते हैं।

तो इस सूर्य-गृह में बीमार मनुष्यों को अलग-अलग कमरों में रखा जाता है। जिस प्रकार के रंग और रंग के गुणधर्म को उपचार विधि के प्रयोग में लाना हो, उसी रंग का काँच सूर्य के किरणों के बीच में इस प्रकार रखा जाता है जिससे सूर्य प्रकाश विशेष रंग के काँच के माध्यम से बाहर निकलता है, उसी रंग के किरणों अर्थात सूर्य के प्रकाश रूपी शक्ति से बीमार की बीमारी दूर हो जाती है। इस तरह सूर्य चिकित्सा के द्वारा अनेक प्रकार की बीमारियाँ दूर होती हैं और बीमार को शक्ति प्राप्त होती है। पूर्ण दिवस भर यह चिकित्सा चलती रहे इसलिये यह सूर्यगृह सूर्यमुखी पुष्प की तरह सदा अपना मुख सूर्य की ओर घुमाता है इसी कारण सूर्योदय से सूर्यास्त तक विशेष सूर्य किरणें बीमार के अंग पर पड़ती हैं। इस प्रकार विज्ञान ने सूर्य शक्ति के अनेक प्रयोग किये हैं। भोजन

पकाना, पानी गरम करना इत्यादि कई कार्य देश-विदेश में सूर्य शक्ति द्वारा होते हैं।

परमात्मा को भी ज्ञान सूर्य कहते हैं। इस ज्ञान सूर्य का उदय सारे कल्प के इतिहास में एक ही बार सिर्फ संगमयुग में होता है। आज तक ज्ञान सूर्य का ज्ञान हमने सबको दिया अब उनकी महान गुण-शक्ति की अनुभूति दुनिया को कराने की आवश्यकता है और इस अनुभूति कराने का माध्यम है योग की सूक्ष्म शक्ति और उसका प्रयोग। इस प्रयोग द्वारा, जैसे सूर्यगृह में सूर्य के विशेष रंग की किरणों द्वारा उपचार किये जाते हैं उसी तरह आज की सृष्टि के अशांत, दुखी, अशक्त, पीड़ित मनुष्य, ज्ञान सूर्य की शक्ति से पुनः नवजीवन प्राप्त कर सकेंगें।

विज्ञान ने सूर्य शक्ति के प्रयोग के लिये विभिन्न रंग के काँच का प्रयोग किया उसी तरह हम भी परमात्मा के अनेक प्रकार के गुण, शक्ति तथा संबंध के प्रयोग द्वारा आज के मानसिक अशांति आदि से पीड़ित मनुष्यात्माओं को फिर सुखी कर सकते हैं। शब्द में संबंध जोड़ने की शक्ति है। शब्द के सुर-मिलाप से संगीत बनता है। भारतीय संगीत की यह विशेषता है कि हर प्रहर अर्थात प्रातः, मध्यान्ह, सायं, रात्रि के लिये अलग-अलग राग हैं। ऋतु (Seasons) के लिये भी भिन्न-भिन्न राग हैं तो प्रसंगानुसार विभिन्न संगीत भी हैं। युद्ध के मैदान में शौर्य प्रदान करने वाले गति हैं तो मृत्यु की गंभीर छाया दर्शाने वाले गंभीर राग भी हैं। तो हम भी संगीत की सूक्ष्म राग रूपी शक्ति द्वारा परमात्मा की विभिन्न प्रकार की शक्ति के मनुष्य के प्रति अनुराग उत्पन्न करा सकते हैं।

शब्दों के विशेष प्रकार के भाव और लय या अर्थ से बोलने से भी परमात्मा के गुणों की अनुभूति करा सकते हैं। योग में स्थित कराते समय हमारे कई बहन-भाई विशेष प्रकार से कोमेन्टरी (Commentry) बोलते हैं। आनन्द, प्रेम शक्ति सुख आदि की अनुभूति कराने के लिये यदि हमारे बहन-भाई विशेष प्रकार के शब्द-युक्त कोमेन्टरी बनावें, और ऐसी कोमेन्टरी के शब्दों का पार्श्व संगीत के साथ मिले-जुले शब्द और संगीत द्वारा योग में स्थित व्यक्ति परमात्मा से विशेष सूक्ष्म गुण और शक्ति का अनुभव कर सकेगा। परमात्मा के ज्ञान का दान देना और गुण या शक्ति दान देने में रात-दिन का फर्क है। फलों के राजा आम का शब्द-ज्ञान देने में सुनाने वाले को जो अनुभूति होती है और उसी आम के खाने वाले को जो अनुभूति होती है इन दोनों अनुभूतियों में जितना फर्क है उतना फर्क हम किसको शब्दों द्वारा कहें कि परमात्मा सुख-शान्ति के दाता हैं और सुगम शब्द और संगीत के प्रयोग द्वारा हम अतीन्द्रिय सुख-शान्ति का अनुभव कराके परमात्मा के अस्तित्व की अनुभूति करावें।

परमात्मा के साथ हम सभी प्रकार के संबंध रख सकते हैं। संबंध को भी विशेष रूप से याद करें तो उसी संबंध की अनुभूति हो सकती है। परमपिता परमात्मा ज्ञान का सागर है इसी संबंध से याद करने से मैंने अनेक अपने विशेष भाषण या कार्यों में मदद का अनुभव किया है। विघ्नों के समय सच्चे विघ्न-हर्ता को याद करके विघ्न पार किये हैं। जीवन संग्राम में अनेक प्रकार की समस्यायें आती हैं, उस समय साथी के रूप में परमात्मा को याद करने से शिव बाबा साथीपन की पूर्ण रूप से भासना देते हैं। मैं जब १९७४ में लंदन में ईश्वरीव सेवा अर्थ २ मास रहा था तब एक ४८-५० वर्ष की माता सेवा केन्द्र पर आयी और कहने लगी कि वह आत्म हत्या करना चाहती थी उसी समय उसको एक सखी ने राजयोग सेवाकेन्द्र पर जाने के लिये अनुग्रह किया। उसी कारण वह सेवा केन्द्र पर आई थी। उसने कहा कि उसका पति एक बहुत बड़े कंपनी का मेनेजिंग डायरेक्टर है, दो लड़के अमेरिका में पढ़ते हैं, उसी कारण वह अकेली हो जाती है। अकेलापन सहन न होने के कारण वह आत्महत्या करने को तयार हुई थी। मैंने उनको परमात्मा का ज्ञान साथी रूप तथा सखा-

रूप की दृष्टि से दिया। अपने दिल ही दिल में उस दिलाराम परमात्मा की दिलरुबा पर साथी और सखीपन के भाव के गीत गुनगुनाने को कहा। उसी प्रकार की कोमेन्टरी द्वारा मैंने उनके अन्दर परमात्मा के साथ सखापन के भाव की ज्योति प्रज्वलित की और प्रातःकाल में भी उसी प्रकार के स्थिति में योगाभ्यास करने के लिये कहा। इस प्रयोग की सफलता के लिये ऊषा बहन तथा मैंने उस आत्मा को योगदान दिया। चार-पाँच दिन में ही वह आत्मा फिर से प्रभुतल्लीन होगई और फिर से वह रूहानी बगीचे की प्यारे बाबा की प्यारी कली खिल उठी। इस प्रकार योग द्वारा एक आत्म हत्या बच गई—उसको जीवनदान मिल गया। इस प्रकार हमारे भाई बहनों द्वारा जीवनदान प्राप्त होने के अनेक उदाहरण हैं।

योग में विकर्म विनाश करने की शक्ति है। सामान्य रीति से योग में हम सामूहिक रूप से, विकर्म विनाश करते हैं। परन्तु जैसे एक वेल्डिग (Welding) करने वाला ज्वाला को एकाग्र (Concentrate) करके वेल्डिग का कार्य करता है। उसी तरह हम इस विकर्म विनाश करने वाली शक्ति का किसी एक विशेष दुःख, मनमुटाव या मतभेद के ऊपर केन्द्रित करें तो योग की शक्ति द्वारा ये सब बातें दूर हो सकती हैं।

अब समय सिर्फ परमात्मा के ज्ञान देने का नहीं है किंतु परमात्मा की शक्ति, गुण, संबंध तथा दिव्य अवतरण की अनुभूति कराने का है। तो चलो ! हम समय को पहचान और उसी प्रकार राजयोग शिविर तथा अन्य प्रकार की ईश्वरीय सेवा में विविधता लावें।

अतः जैसे वैज्ञानिकों ने सूर्य-शक्ति को विविध रूप से कार्य में लाया है उसी तरह हम ब्रह्मा वत्स भी ज्ञान सूर्य परमात्मा की शक्ति, गुण तथा उनके साथ के संबंध से प्राप्त होने वाली प्राप्तियों के अनुभव के आधार पर सूक्ष्म सेवा जनता के सामने रखें तो ईश्वरीय सेवा में एक अनोखी क्रान्ति आ सकती है।

○

मितव्ययता : जीवन जीने की कला

(पृष्ठ २१ का शेष)

मेरी यह दुनिया कितनी छोटी-सी है, जिसमें बस दो ही हैं—"मैं और मेरा बाबा" पर इस छोटी-सी दुनिया में सर्व सम्बन्धों का सुख, सर्व गुणों की बहार, सर्वशक्तियों की बौछार और प्यार की बरसात है। मेरी नजरों के सामने मेरा प्राण, मेरा श्वास मेरा जीवन बठा है और मैं नयनों में रूहानी चमक लिए उसे निहार रही हूँ।

कितना आश्चर्य है ! यहाँ मैं और मेरा बाबा दोनों ही पिंजरों में बन्द है। आँखों की खिड़कियों से एक दूसरे को निहार रहे हैं। दिल की बातें कह, सुन रहे हैं। वैसे तो हम बिना पिंजरों का आधार लिए घर (शान्तिधाम) में मिलते हैं, पर पिंजरों में बन्द होकर एक दूसरे को निहारना कितना अच्छा लगता है ! □

अब्बा का मिलन

(पृष्ठ २८ का शेष)

में घृणा, हिंसा व अत्याचार का बीज बो दिया है, उसकी अन्तिम परिणति क्या होगी, परमात्मा जाने ?

सारे संसार का कल्याण तो विश्वशान्ति के लिये कार्यरत ब्रह्माकुमारियों के इसी चिंतन में दिख रहा है, "हमने विश्व से जो लिया है वह हम उसे देंगे भी, हम उससे इतना नहीं लेंगे कि दूसरे लोग अपने उचित अंश से वंचित रह जावें और हम उतना ही लेंगे जितना हमें औचित्यपूर्ण मिलना चाहिये।" इसी बात को हम कविता में यूं दुहरा सकते हैं—

भगवन उतना दीजिये, जामें कुटुम्ब समाय।
मैं भी भूखा न रहूं, अतिथि न भूखा जाय॥

□

शराब की जगह ज्ञान अमृत पी रहा हूँ

ब्र० कु० विमल 'आर्ट' नरसिंहगढ़ (म० प्र०)

मेरा लौकिक जन्म (६-३-६१ में) कायस्थ परिवार में हुआ। बचपन से ही मैं अंध-श्रद्धा युक्त भक्ति से दूर रहा। पढ़ाई में मन न लगने से मैंने बी० ए० तक शिक्षा प्राप्त करके पढ़ाई छोड़ दी तथा बचपन से ही पेन्टिंग की ओर विशेष लगाव रहा। पेन्टिंग का कार्य मैंने १८ वर्ष की उम्र में चालू किया और पेन्टिंग की दुकान घर में ही एक कमरे में खोल ली। अधिकतर मेरा साथ कलाकारों से रहा। पेन्टिंग का पूरा पैसा शराब, मीट, तम्बाकू आदि बुरी चीजों में लगाया। परिवार के लोग जबकि इसके बड़े विरोधी थे। सच्चा रास्ता न मिलने के कारण मुझे वह सब कुछ करना पड़ा जो नहीं करना चाहिये था। कालेज में लड़ाई झगड़े, तोड़ फोड़ करने में और राजनीति में आगे रहा। पेन्टर होने की वजह से मैं पार्टी के उम्मीदवारों का प्रचार करता था। स्कूलों में खेलकूद में विशेष रूचि रही तथा श्रेष्ठ खिलाड़ी रहा।

मेरे परिवार के सदस्यों में से मेरी बड़ी बहन तथा उनके पति और बच्चे ६-१० वर्ष से पूरे नियम से ज्ञान में चल रहे हैं अब बुरहानपुर, जिला खण्डवा (म० प्र०) में क्लास करते हैं। बाकी सब लोग इसके विरुद्ध थे। सन् १९७७ में मैं अपनी बहन के यहाँ गया था तो उस समय उनके वहाँ घर ही में सतसंग और प्रदर्शनी का कार्यक्रम चल रहा था। एक महीने तक मैं वहाँ सतसंग में ज्ञान सुनता रहा। उसके बाद मैं वहाँ से आया तो संग सही न मिलने से व आश्रम न होने से मुझे वापस विकारों में जाना पड़ा। जनवरी सन् १९८२ को यहाँ पर प्रवचन, प्रदर्शनी और फिल्म शो का कार्यक्रम चल रहा था। मैंने यह सब देखा, सोचा और समझा। फिर रोज सतसंग में आता रहा। पहले से ज्ञान होने से मुझे विकारों पर विजय पाने में परेशानी नहीं हुई। टीचर के कहे अनुसार चलता रहा उसका परिणाम यह निकला कि मुझे सच्चा रास्ता मिल गया और सुख शान्ति की अनुभूति होने लगी दुनिया से लगाव हटता गया जीवन कमल समान बनता गया। मुझे भूला हुआ रास्ता वापस मिल गया।

जीवन में परिवर्तन तुरन्त आने से परिवार के लोग भी मुझे देख आश्रम पर आने लगे और सतसंग करने लगे तथा नियमों पर चलने लगे। सभी लोग मधुबन भी होकर आये सभी को बहुत सुख शान्ति की अनुभूति हुई। इस प्रकार निश्चिन्त हो गये और बाबा पर निश्चय हो गया। अब लौकिक से अलौकिक में आ गये।

प्रतिदिन ज्ञान अमृत पी कर ज्ञान, योग, धारणा और सेवा को प्रैक्टिकल में ला रहा हूँ। ब्रह्माकुमार का जीवन बिताने का दृढ़ संकल्प कर लिया है। अन्त में मैं यही कहूँगा कि मेरा जीवन ब्रह्माकुमारी बहनों ने नहीं बदला बल्कि स्वयं परमात्मा की शक्ति ने बदला।

"रंग बदलेंगी जमीं, मौसम बदलते जायेंगे
जो कर सके बाबा से जुदा, वह पल फिर न आयेंगे।"

○

अब्बा का मिलन

ब्र० कु० उर्मिला, कुरुक्षेत्र

ऊँची-ऊँची घेर घुमावदार पहाड़ियों को, आसमान को छूने की कोशिश करने वाले लम्बे-लम्बे वृक्षों को पीछे छोड़ते हुए हम तन-मन को शीतल करने वाले शीतल धाम पहुँच गए। आबू पहुँचते ही एक अलौकिक मेरेपन की ललक मन पर छा जाती है। यह घर मेरा है, मेरे बाप का है, मेरे लिए है, यहाँ का कण-कण मेरा अपना है, ये भावनाएँ स्वतः ही उद्वेलित होने लगती हैं। चारों तरफ बहती रुहानियत की धारा शनैः-शनैः मन पर जमी मैल की परतों को धोकर कोरा कागज बना देती है, आत्मा साफ शीशे की तरह चमक उठती है और जब इस दर्पण में अपनी ही सूरत निहारते हैं तो कुछ और ही नजर आता है। मन अपने आप से पूछने लगता है—"यह सब परिवर्तन किसने कर दिया, कब कर दिया, कैसे कर दिया ? सात जन्मों में भी पूरी न होने वाली तमन्नाओं को सात दिन में कौन पूरा कर रहा है ?" जवाब में नज़रें नयनों के नूर बाबा पर जा टिकती हैं। मन महिमा में बहुत कुछ कहना चाहता है पर होंठ धीरे-धीरे एक ही शब्द गुनगुना पाते हैं—'बाबा', 'बाबा', 'बाबा'। नयनों से मोती बरसने लगते हैं। जैसे सावन भादों की बरसात के बाद आकाश निर्मल हो जाता है, उसी प्रकार बाबा के स्नेह में बरसने वाले ये मोती आत्मा को पवित्र स्वर्णपट बना देते हैं, जिस पर पुराना सब कुछ मिटकर दो सुनहरी अक्षर चमक उठते हैं 'बाप-दादा'। जब-जब दिल से पूछा—"ए दिल सच-सच बता तुझे सबसे प्यारा कौन है ?" एक ही जवाब मिला—"परमधाम में रहने वाले प्रियतम के सिवा सब कुछ निस्सार है।" जब-जब आँखों से पछा—"कौन-सी सूरत प्यारी है ?" जवाब पाया—"गुण-स्नेह-शक्तिमूर्ति बाबा ही दर्शनीय है।" जब-जब कानों से पूछा कौन-सी आवाज़ प्यारी है ? यही सुनने को मिला—"साजन की प्यार भरी सरस शिक्षाओं के सिवा सब कुछ फीका है।" अपने आप पर आश्चर्य होता है, इतना सच्ची मैं कब बन गई। यह सब पाने के लिए मैंने कुछ मेहनत तो नहीं की। सुना करते थे भगवान को याद करना और पाना दोनों ही काम बड़े मुश्किल हैं, पर यहाँ तो क्षण-क्षण बाबा दिल में समाया रहता है। यहाँ का कण-कण बाबा की याद दिलाता है और दिल से आवाज निकलती है—वाह ! बाबा वाह ! ! तूने क्या-क्या कर दिया। हमें क्या से क्या बना दिया।

जिस दिन से ज्ञान सूर्य बाप के अपनी शक्तियों रूपी स्वर्णमयी रक्तिम किरणों के साथ सम्पूर्ण विश्व को आलोकित करने के लिए उदित होने का समाचार मिल जाता है, उसी दिन से हम ज्ञान सितारों में भी झिलमिलाहट बढ़ जाती है। नई उमँगें, नई आशाएँ दिल के आँगन में झाँकने लगती हैं। सभी बच्चे सर्वशक्तिवान बाप से सर्वशक्तियों के वरदान पाकर ध्रुव तारा बनने के लिए बेताब हो जाते हैं। तन के आबू पहुँचने से पहले मन हजारों चक्कर आने-जाने के लगा चुका होता है। अनगिनत बार कल्पनाओं में बाबा से मिलकर, नजर से निहाल होकर, वरदानों की पोटली बगल में दबाकर स्टेज से नीचे उतर चुके होते हैं।

आबू पहुँचते ही यह स्पृहणीय क्षण साकार हो उठता है। बुद्धि का संसार नयनों के सामने उतर आता है। मन गाने लगता है—"मेरी दुनिया मेरे सामने है मुझे और करना क्या ?" बाबा को सामने पाकर आँखों को झपकना गवारा नहीं। सच भी है, क्यों झपकें ये आँखें ? प्यासा इन्सान पानी के गिलास को एक ही श्वास में पी जाता है। कल्प भर की प्यासी आत्मा आँखों द्वारा बाबा के रूप को पी जाना चाहती है, अपनी दुनिया को अपने में समा लेना चाहती है।

(शेष पृष्ठ २६ पर)

आओ खेल खेलें

ब्र० कु० प्रेमसागर, लक्ष्मी नगर देहली

सामने हम एक ४९ खानों की बनी सारणी का चित्र दे रहे हैं। जिसमें तीन प्रकार के खाने हैं। पहला सफेद, दूसरा लिखा हुआ, और तीसरा काला है। अब आपको सफद वाले खानों में सही उत्तर भरना है। जिससे अन्त में आपको सभी शब्दों को पढ़ने के पश्चात् कोई न कोई बापदादा द्वारा दिया गया धारणा युक्त सलोगन मिलेगा। ये सलोनग लगभग १२ शब्दों का होगा। जब आप सफेद वाले खाली खानों को भर लेंगे तो उसके पश्चात् अपने उत्तर का सही मिलान कीजिए, जो कि इसी अंक में कहीं पर दिया हुआ होगा। इस खेल को खेलने के लिए निर्धारित समय १० मिनट।

मी	ठे	■	ब	च्च	चे	■
■	■		द	■		र
■		वा	■	■	■	का
	ब		■	लॉ		■
	गा		■	■		हीं
■	■	तो	■		या	■
■	आ	■		वे		■

आपको कितना मालूम है ?

ब्र० कु० सरोज, बीकानेर

नीचे हम ५ प्रश्न दे रहे हैं। प्रत्येक प्रश्न के नीचे उसके चार उत्तर हैं, अब आपको दिये हुये उत्तरों में से एक सही उत्तर चुनना है, और फिर नीचे दिये गये सही उत्तरों से मिलान करना है। सभी प्रश्नों के उत्तर दिये गये उत्तरों से मिलान करने के पश्चात् आप स्वयं ही इस बात का फैसला कर सकते हैं कि आपको कितना मालूम है ?

प्रश्न

१. संगम युग को कौन-सा युग कहा जाता है ?

(क) प्रत्यक्ष फल का युग
(ख) मिलन का युग
(ग) कम्बाइन्ड युग (घ) प्रालब्ध का युग

२. मुरली ब्राह्मण जीवन का क्या है ?

(क) आधार (ख) भोजन
(ग) स्वाँस (घ) श्रृंगार

३. ज्ञान पढ़ाई है तो भक्ति क्या है ?

(क) गँवाई है (ख) गिरती कला
(ग) अन्ध श्रद्धा (घ) आध्यात्मिक मनोरंजन

४. सौभाग्यशाली आत्मा किसे कहते हैं—

(क) संगमयुगी आत्मा (ख) शिव वंशी
(घ) सूर्य वंशी (घ) चन्द्र वंशी

५. आत्मा सच्चा सोना बनती जा रही है उसकी निशानी क्या होगी।

(क) खुशी में नाचते रहेंगे
(ख) मीठा बोलेंगे
(ग) फरिश्ते नजर आयेंगे
(घ) मोल्ड होते जायेंगे

---

(१) प्रत्यक्ष फल का युग (२) श्वाँस (३) आध्यात्मिक मनोरंजन (४) सूर्यवंशी (५) मोल्ड होते जावगे।

आध्यात्मिक सेवा समाचार

ब्र० कु० लक्ष्मण, सत्यनारायण, कृष्णा नगर, देहली द्वारा संकलित

दिल्ली त्रीनगर—वैसाखी के पर्व पर त्रीनगर सेवा केन्द्र की ओर से जमना के कुसिया घाट पर शिव दर्शन आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गई, जिसको स्नान करने आये हुए हजारों भक्तों ने देखा तथा लाभ उठाया। इसके अलावा पश्चिम विहार में तीन दिन के लिए आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। राजयोग फिल्म भी दो स्थानों पर दिखाई गयी।

दिल्ली पालम — सेवा केन्द्र की तरफ से जन-जन को सन्देश देने हेतु एक दिन टीचर्स सम्मेलन किया गया जिसमें ४० टीचर्स ने भाग लिया। एक दिन बच्चों का सम्मेलन हुआ जिसमें ५० बच्चों ने भाग लिया। इसके अलावा तीन स्थानों पर प्रोजेक्टर शो भी किए गये। मिल्ट्री युनिट में भी आध्यात्मिक प्रोग्राम रखे गये।

राजौरी—(जे० एन्ड के०) में आध्यात्मिक संग्रहालय का उद्घाटन डिस्ट्रीक्ट मजिस्ट्रेट एवम् डिवेलपमेन्ट कमिश्नर द्वारा सम्पन्न हुआ। इसके पूर्व राजौरी नगर में शान्ति यात्रा भी निकाली गई। इसके साथ दिव्य झाँकी भी सजाई गई। इस शान्ति यात्रा में २५, ३० मिलट्री के आफिसर और अन्य अधिकारियों ने भी भाग लिया। उद्घाटन के पश्चात् एक फंकशन का भी आयोजन किया गया। जिसमें शहर के प्रमुख व्यक्तियों ने लाभ प्राप्त किया।

फिरोजाबाद—समाचार मिला है कि फिरोजाबाद के पास नारखी गाँव में आयोजित एक विशाल मेले में विश्व-शान्ति आध्यात्मिक मेले का आयोजन किया गया। इस बीच वि० डी० ओ० कैसिट द्वारा राजयोग फिल्म दिखाई गयी, इसके साथ मैनपुरी मदनपुर गाँव में भी आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गयी।

देहरादून—प्राप्त समाचार के अनुसार गीता आश्रम ऋषिकेश के महन्त स्वामी वेद व्यासानन्द जी सरस्वती, आध्यात्मिक संग्रहालय में पधारे, लगभग एक घण्टा ज्ञान चर्चा करने के पश्चात् आपने कहा कि यहाँ आकर मुझे बहुत ही शान्ति का अनुभव हो रहा है। **"इतनी शान्ति उसी स्थान पर होती है जहाँ पवित्रता है।"** संग्रहालय देखने के पश्चात् योग कक्ष में आपने योग अभ्यास भी किया अन्त में अपने विचार निम्न प्रकार व्यक्त किये—"ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के संग्रहालय को देखकर मैं बहुत ही प्रभावित हुआ हूँ, हिन्दू संस्कृति व सनातन धर्म व सनातन धर्मी होने के कारण हमने अपने स्वाभाविक उदार स्वभाव से इस संस्था के गुणों व प्रचार कार्य को गम्भीरता व गहराई से देखा तथा बाहर भीतर की स्वच्छता, सद्भाव, सात्विक वातावरण स्नेह व प्रेम-पूर्ण व्यवहार आदि अनेक गुणों को देखकर मैं यहाँ से अत्यन्त प्रभावित होकर जा रहा हूँ। साथ ही साथ ब्रह्माकुमारी प्रेमलता जी ने हमें प्रदर्शनी में कई नये दृष्टिकोण व नई परिभाषाय व चारयुग, गीता व सृष्टि चक्र के विषय में नई-नई व्याख्यायें समझाईं। विश्व भर में अनेक धर्म हैं, अनेक प्रकार की मान्यतायें हैं, सबका रिसर्च होना चाहिए। यहाँ की कई नई मान्यतायें व विचार मैंने देखे व सुने, समझने योग्य हैं। बैठकर विद्वानों में विचार-विमर्श सत्संग चलने पर निकटता बढ़ेगी, ऐसा मेरा विश्वास है।" उन्होंने आबू पधारने की भी इच्छा व्यक्त की। यह भी समाचार मिला है कि हरिद्वार के प्राचीन मठ चेतनदेव कुटिया के संस्थापक चेतन देव जी के निर्वाणोत्सव के उपलक्ष में आयोजित एक सम्मेलन में ब्रह्माकुमारी बहनों को भी निमन्त्रण प्राप्त हुआ। वर्तमान महामण्डलेश्वर ब्रह्महरि जी ने ब्रह्माकुमारी बहनों को भी १० मिनट प्रवचन करने का अवसर दिया। सैकड़ों महात्माओं के बीच ब्रह्माकुमारी प्रेमलता जी ने अपने ज्ञानयुक्त विचार व्यक्त किये। सम्मेलन की अध्यक्षता साधना सदन के अध्यक्ष स्वामी गणेशानंद जी ने की। इसके पश्चात् कई महात्माओं से व्यक्तिगत भेंट हुई जैसे कि हरेराम आश्रम के अध्यक्ष सुखमुनी जी, नाथ सम्प्रदाय के अध्यक्ष रामनाथ जी, डा० श्यामसुन्दर जी आदि।

कलकत्ता—समाचार मिला है कि "अन्तर्राष्ट्रीय युवा वर्ष" के अन्तर्गत भिन्न-भिन्न स्थानों पर अनेक सेवायें की जा

रही हैं—युवा कांग्रेस द्वारा हावड़ा मैदान में युवा मेले का आयोजन किया गया था—इस युवा मेले में ईश्वरीय विश्व-विद्यालय की ओर से युवा प्रदर्शनी लगाई गई। इस प्रदर्शनी का उद्‌घाटन युवा कांग्रेस के प्रेजीडेन्ट भ्राता उत्पल भौमिक, जस्टिस भ्राता मुरारी मोहन दत्ता तथा बंगाल बिहार जौन की संचालिका दीदी निर्मलशान्ता जी द्वारा सम्पन्न हुआ। इस मेले तथा प्रदर्शनी के समाचार रेडियो, टी० वी० तथा समाचार पत्रों में प्रसारित एवं प्रकाशित हुए। इसी प्रकार कांथी में दरूआ नामक मैदान में "गांधी मेले" का आयोजन किया गया था जिसमें विश्व नव निर्माण प्रदर्शनी लगाई गई।

दिल्ली—समाचार मिला है कि राजोरी गार्डन के "राजयोग भवन" के प्रथम वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में आयोजित एक सार्वजनिक कार्यक्रम की अध्यक्षता ब्रह्माकुमारी निर्मलशान्ता जी तथा ब्र० कु० मनोहर इन्द्रा जी ने की। लद्दाख के मुख्य लामा भ्राता कुशक बकुला जी ने मुख्य अतिथि के रूप में भाग लिया। उन्होंने कहा कि ब्र० कु० बहनों द्वारा चरित्र निर्माण के क्षेत्र में की जा रही सेवायें अति सराहनीय हैं। इस कार्यक्रम में राजयोग भवन में प्रथम वर्ष में की गई सेवाओं पर प्रकाश डाला गया।

इन्दौर—प्राप्त समाचार के अनुसार न्यु पलासिया स्थित ओमशान्ति भवन में साप्ताहिक कार्यक्रम "ज्ञानांजलि" के अन्तर्गत १६ मार्च को संध्या ७ बजे "हृदयरोग निरोधक परिसंवाद" का आयोजन किया गया।

कासगंज—समाचार मिला है कि सेवाकेन्द्र की ओर से गाँव-गाँव में आध्यात्मिक प्रदर्शनियों द्वारा ईश्वरीय सन्देश देने की सेवायें धूमधाम से चल रहीं हैं। पिछले मास में लगभग २५ गाँवों में आध्यात्मिक प्रदर्शनियों द्वारा हजारों आत्माओं को ईश्वरीय सन्देश प्राप्त हुआ। गढ़ौली में एक मेले के अवसर पर प्रदर्शनी द्वारा सेवा की गई। ब्रह्मपुरी ग्राम में प्रदर्शनी व प्रवचन के कार्यक्रम रहे। बदौली ग्राम में प्रदर्शनी के पश्चात् नियमित ज्ञान योग की क्लासेज चल रही हैं।

करार—प्राप्त समाचार के अनुसार एस० टी० बस स्टैन्ड पर आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसका उद्‌घाटन डिपो मैनेजर श्री पगारे साहब ने किया। इस प्रदर्शनी को करार डिपो के २०० ड्राइवर्स, २०० कन्डेक्टर्स, ४० कन्ट्रोलर, ८०० वर्कशाप के वर्कर्स तथा १५-२० हजार अन्य यात्रियों ने देखा एवं आध्यात्मिक जीवन बनाने की प्रेरणा प्राप्त की।

हांसी—समाचार मिला है कि हांसी में "विश्व शान्ति एवं एकता" नामक विषय पर एक विशाल आध्यात्मिक सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विद्यालय की सह प्रशासिका दादी चन्द्रमणी जी ने सम्मेलन को सम्बोधित किया। मुख्य अतिथि के रूप में पधारे स्थानीय एस० डी० एम० भ्राता जे० एस० यादव जी ने कहा कि धार्मिक सम्मेलन में इतनी बड़ी संख्या में लोग पधारे हैं, तथा शान्ति पूर्वक अनमोल वचन सुन रहे हैं यह देखकर मुझे अति प्रसन्नता हुई है। विश्व शान्ति के लिए इस संस्था के प्रयास सराहनीय हैं। हांसी के समीप बुवानीखेड़ा में नवनिर्मित राजयोग भवन का उद्‌घाटन दादी चन्द्रमणी जी ने किया। उद्‌घाटन कार्यक्रम में ग्रामीण जनता ने ज्ञान योग का लाभ प्राप्त किया।

चण्डीगढ़—सेवाकेन्द्र से प्राप्त समाचार के अनुसार पंजाब जोन की संचालिका तथा ईश्वरीय विश्व विद्यालय की सहप्रशासिका दादी चन्द्रमणी जी ने पिछले मास में पंजाब तथा हिमाचल के १८ सेवाकेन्द्रों का भ्रमण किया। इस भ्रमण के दौरान अनेक आत्माओं में नया उमंग-उल्लास भरा। प्रत्येक स्थान पर सार्वजनिक कार्यक्रम के आयोजन तथा प्रतिष्ठित व्यक्तियों के लिए स्नेह मिलन रखे गये। कुछ सेवाकेन्द्रों से प्राप्त समाचार निम्न प्रकार हैं—

सिरसा—सेवाकेन्द्र की ओर से नगर के मुख्य स्थान "गीता भवन में" कालेज के विद्यार्थियों के लिए एक निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। विषय था—युवा तथा सामाजिक कुरीतियाँ। नगर के एस० डी० एम० ने मुख्य अतिथि के रूप में भाग लिया। युवकों ने विषय से सम्बन्धित अपने-अपने विचार प्रस्तुत किये। अन्त में प्रथम द्वितीय तथा तृतीय आने वाले युवकों को पुरस्कार दिया गया। जिला कचहरी के वकीलों की सभा में प्रवचन का कार्यक्रम रखा गया। दादी चन्द्रमणी जी ने सभी को दिव्य जीवन बनाने की प्रेरणा दी।

फतेहाबाद—स्थानीय कालेज में प्रोफेसर्स के लिए एक स्नेह मिलन का आयोजन किया गया। ब्रह्माकुमार लक्ष्मण जी ने अपने अनुभवों से श्रोताओं की शंकाओं का समाधान

किया। व्यापारी वर्ग के लिए एक स्नेह मिलन सेवाकेन्द्र पर चला। जिसमें दादी जी ने राजयोगी बनने की प्रेरणा दी।

जींद—सेवाकेन्द्र पर "विश्व परिवर्तक आध्यात्मिक सम्मेलन" का आयोजन किया गया। जिसमें देहली से भ्राता जगदीश जी तथा चक्रधारी बहन ने भाग लिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता दादी चन्द्रमणी जी ने की। सम्मेलन से अनेक प्रतिष्ठित आत्माओं को ईश्वरीय सन्देश मिला दूसरे दिन सेवाकेन्द्र पर एक स्नेह मिलन का भी आयोजन किया गया। इसी प्रकार की सेवायें पटियाला, मानसा, भटिण्डा, गिदड़बाह, डबवाली, हिसार, हांसी, कैथल, भवानीखेड़ा, पानीपत, करनाल, चण्डीगढ़ आदि सेवाकेन्द्रों पर भी हुई।

अहमदाबाद—मणीनगर सेवाकेन्द्र से प्राप्त समाचार के अनुसार गुजरात के प्रसिद्ध कथाकार श्री छोटेमुरारी बापू गुजरात जोन के नये स्थान "सुख-शान्ति भवन" में पधारे। उन्होंने ईश्वरीय विश्व विद्यालय की गतिविधियों को भलीभांति देखा तथा स्नेहयुक्त ज्ञान वार्तालाप की। अन्त में उन्हें ईश्वरीय साहित्य भेंट किया गया। इसी प्रकार गुजरात विद्यापीठ के "पीस रीसर्च स्टडी" के प्रोफेसर पाठक ने "राजयोग भवन" की मुलाकात ली। और विश्व शान्ति के विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किये। उन्हें विद्यालय द्वारा चल रहे विश्व शान्ति के प्रयासों से अवगत कराया गया। सी० एन० आई० चर्च के पादरी श्री सावदाइ भाई सेवाकेन्द्र पर पधारे तथा राजयोग के विषय में जानकारी प्राप्त की। "गुडीपड़वा" के अवसर पर युबक मंडल द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम में २०० सिन्धी भाई बहनों के समक्ष गुजरात जोन की संचालिक ब०कु० सरला बहन ने सिन्धी भाषा में आध्यात्मिक प्रवचन किया।

हैदराबाद—समाचार मिला है कि सिद्दीपेट उपसेवाकेन्द्र द्वारा विशेष गाँव-गाँव में ईश्वरीय सेवायें चल रही हैं। रंगधामपल्ली नामक ग्राम में प्रोजेक्टर द्वारा आध्यात्मिक चित्रों की स्लाईडस दिखाई गई तथा प्रवचन का कार्यक्रम चला। "भारत नगर" नामक स्थान पर दो दिवसीय आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी एवं राजयोग शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर आध्यात्मिक चित्रों की स्लाईडस तथा युवा शक्ति के महत्व की स्लाईडस भी दिखाई गई। पदमानगर कालोनी के लाइब्रेरी हाल में एक मास के लिए आध्यात्मिक प्रदर्शनी एवं चरित्र निर्माण प्रदर्शनी आयोजित की गई। अनेक आत्माओं ने राजयोग शिविर का भी लाभ उठाया।

शहडोल—सेवाकेन्द्र की ओर से मानव एकता आध्यात्मिक सम्मेलन का आयोजन नगर के प्रसिद्ध पंचायती मन्दिर के प्रांगण में किया गया। सम्मेलन के मुख्य अतिथि थे शहडोल जिले के जिलाधीश भ्राता पुष्पकुमार दीक्षित जी। कार्यक्रम के अन्त में "द्वितीय विश्व शान्ति सम्मेलन, आबू" की वीडियो फिल्म भी दिखाई गई। इसके अलावा २१ मार्च से २५ मार्च तक शिव दर्शन आध्यात्मिक प्रदर्शनी भी लगाई गई जिससे अनेक आत्माओं को ईश्वरीय सन्देश प्राप्त हुआ। सेवाकेन्द्र पर त्रिदिवसीय राजयोग शिविर के भी आयोजन हुए। स्थानीय समाचार पत्रों द्वारा भी जन-जन को ईश्वरीय सन्देश दिया गया।

जिम्बाबवे—समाचार मिला है कि बुलवायो के सिटी हाल में एक "युनिटी इन ब्रदरहुड" नामक सम्मेलन का आयोजन किया गया। जिसमें शहर के अनेक प्रतिष्ठित व्यक्ति वक्ता के रूप में पधारे। सम्मेलन का उद्घाटन बुलवायो के महापौर द्वारा सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर एक आध्यात्मिक प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया जिससे अनेक आत्माओं ने दिव्य सन्देश प्राप्त किया। शिवरात्रि के उपलक्ष्य में भी अलग-अलग स्थानों पर प्रदर्शनियाँ रखी गईं। नैरोबी में यू० एन० ओ० की ओर से होने वाली वीमेन कानफ्रेन्स से सम्बन्धित बुलवायों में एक विशाल महिलाओं की गोष्ठी का आयोजन हुआ जिसमें ब्रह्माकुमारी बहनों ने भी भाग लिया।

मीठे बच्चे ! याद और सेवा का डबल लाक लगाओ, नहीं तो माया आ जावेगी।

जगदीश चन्द्र हसीजा, मुख्य सम्पादक, ब्र० कु० आत्म प्रकाश, सम्पादक, बी ६/१६ कृष्णानगर, दिल्ली द्वारा सम्पादन तथा ग्रन्थ भारती, शाहदरा, दिल्ली-३२ से छपवाया, Regd. No 10563/65-D, (E)—70